नयी पुस्तकें 2021-22

उपन्यास

भटकती रूह की स्मृतियाँ / मिखाइल नईमी अनु. : जंग बहादुर गोयल, नीलम गोयल	978-81-951344-4-1	295/-
ईश्वर के बीज /विनोद शाही	978-81-951344-0-3	395/-
सुल्फी यार /अमित ओहलाण	978-81-951344-6-5	450/-
रेडवाइन ज़िन्दगी /निर्मल जसवाल	978-93-92635-06-9	300/-
कैम्प के देवता /प्रतिभा	978-93-92635-05-2	395/-

कहानी संग्रह

अश्वमेध तथा अन्य कहानियाँ/राजकुमार राकेश	978-93-92635-9-0	650/-
कैंसरवार्ड /राजकुमार राकेश	978-81-951344-2-7	295/-
बचपन की बारिश और अन्य कहानियाँ/जयशंकर	978-81-951717-3-6	350/-
प्रलय में नाव /तरुण भटनागर	978-81-951717-5-0	295/-

कविता संग्रह

यह कैसा समय /सुधीर सक्सेना	978-93-87555-89-1	350/-
आईने और असली कद /संजय मिश्र	978-81-929635-00-7	300/-
न्यूटन भौंचक्का था /निरंजन श्रोत्रिय	978-93-929635-29-8	250/-
चिड़िया की आँख भर रौशनी में/अच्युतानंद मिश्र	978-93-929635-23-6	300/-
आद्यनायिका /अरुणाभ सौरभ	978-93-87555-87-7	200/-

आलोचना/विमर्श

यादों की किताब /एदुआर्दो गालेआनो अनु. : रेयाज़ुल हक़	978-81-951717-1-2	495/-
अनल पाखी (नामवर सिंह की जीवनी) /अंकित नरवाल	978-81-951344-8-9	725/-
हिंदी साहित्य का इतिहास कुछ पाठ, कुछ विचार सं. देवेंद्र चौबे, अजयकुमार यादव, गणपत तेली	978- 81-951717-0-5	995/-

कोलाहल में कविता की आवाज़/अच्युतानंद मिश्र	978- 81-951717-7-4	495/-
साहित्य के नये प्रतिमान /विनोद शाही	978-93-929635-31 -1	550/-
भक्ति का लोकवृत्त इतिहासहंता मीमांसा /डॉ. सेवा सिंह	978-93-929635-53-3	595/-
विमर्श की संगति /प्रमिला के पी	978-93-929635-47-2	350/-
दलित स्त्री विमर्श और हिंदी आलोचना के प्रतिमान/रामनरेश राम	978-93-929635-39-7	395/-

दलित चेतना के उपन्यासकार जगदीश चंद्र के कालजयी उपन्यास

- धरती धन न अपना 250
- कभी न छोड़ें खेत 150
- जमीन अपनी तो थी 150
- नरककुंड में बास 200
- घास गोदाम 250
- मुट्ठी भर कांकर 195
- लाट की वापसी 180
- आधा पुल 195

आधार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची

उपन्यास

ईश्वर के बीज	विनोद शाही	395
सुल्फी यार	अमित ओहलाण	450
रेड वाइन ज़िन्दगी	निर्मल जसवाल	300
कैम्प के देवता	प्रतिभा	395
गली हसनपुरा	रजनी मोरवाल	250
भटकती रूह की स्मृतियाँ	मिखाइल नईमी अनु. जंगबहादुर गोयल	295
गैडफ्लाई	ईथल लिलियन वायोनिच अनु. जंगबहादुर गोयल	595
ज़ोरबा द ग्रीक	निकोस कज़ानज़ाकिस अनु. जंगबहादुर गोयल	595
राजा, जंगल और काला चाँद	तरुण भटनागर	595
बारिशगर	प्रत्यक्षा	395
चंचला चोर	शिवेंद्र	450
अंधेरा कोना	उमाशंकर चौधरी	350
शिलावहा	किरण सिंह	250
प्रार्थना में पहाड़	भालचंद्र जोशी	450
श्रीवन	विक्रम मुसाफ़िर	350
मेरा यार मरजिया	अमित ओहलाण	495
लाल गुस्से के अंगूर **नोबल पुरस्कार**	जॉन स्टाइनबेक अनु. राजकुमार राकेश	695
मुकदमा	फ्रेंज़ काफ़्का अनु. राजकुमार राकेश	450
कायर **पुरस्कृत**	स्टीफन स्वाइग अनु. अनुराधा	495
कंदील	राजकुमार राकेश	495
गांव भीतर गांव	सत्यनारायण पटेल	495
अन्हियारे तलछट में चमका **पुरस्कृत**	अल्पना मिश्र	200
ये दिये रात की ज़रूरत थे	कविता	250
भले दिनों की बात थी	विमल चंद्र पाण्डेय	300
लौटती नहीं जो हंसी **पुरस्कृत**	तरुण भटनागर	200
इक़बाल	जयश्री रॉय	300

मगहर की सुबह	वंदना शुक्ल	200
पांचवां पहर **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	250
अंधे घोड़े का दान **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	250
भर सरवर जब उच्छलै **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	495
परसा **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	395
सांझ-सवेर **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	250
घर और रास्ता **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	250
अध-चाँदनी रात **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	125
मढ़ी का दीवा **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	200
नौकर की कमीज	विनोदकुमार शुक्ल	350
खिलेगा तो देखेंगे	विनोदकुमार शुक्ल	450
धर्मक्षेत्र	राजकुमार राकेश	350
निर्वासित प्रेतों की जीवनी	राजकुमार राकेश	150
हवेली से बाहर **पुरस्कृत**	राजकुमार राकेश	250
मुट्ठी में बादल	हरियश राय	250
नागफनी के जंगल में	हरियश राय	150
हिडिम्ब **पुरस्कृत**	एस.आर. हरनोट	300
शमा बागबान	सुनील कुमार श्रीवास्तव	300
हलफ़नामा **पुरस्कृत**	शैलेय	250
उत्तर वनवास	अरुण आदित्य	250
एक समुंदर लाइटहाउस के किनारे	अभिलाष वर्मा	200
घेरा	ओमकार चौधरी	150
चल हंसा देस अपने	उषा गोयल	400
दलित **पुरस्कृत**	विजय सौदाई	495
वंदे मातरम्	विजय सौदाई	495

कहानी संग्रह

अश्वमेध तथा अन्य कहानियाँ	राजकुमार राकेश	650
कैंसरवार्ड	राजकुमार राकेश	295
बचपन की बारिश और अन्य कहानियाँ	जयशंकर	350
प्रलय में नाव	तरुण भटनागर	295
प्रतिनिधि कहानियाँ	जयशंकर	495

प्रतिनिधि कहानियाँ	राजेंद्र श्रीवास्तव	350
छप्पन छुरी बहत्तर पेंच	रणेन्द्र	250
साज़-नासाज़	मनोज रूपड़ा	250
टावर ऑफ सायलेंस	मनोज रूपड़ा	250
लफ्फाज़ और अन्य कहानियाँ	योगेंद्र आहूजा	300
दुश्मन मेमना	ओमा शर्मा	395
कालजयी कहानियां	स्टीफन स्वाइग अनु. ओमा शर्मा	495
कारोबार और अन्य कहानियाँ	ओमा शर्मा	350
अँधेरे में हँसी	योगेंद्र आहूजा	350
नागरी सभ्यता	राकेश मिश्र	295
रज्जब अली	हेमंत कुमार	400
आपात्काल डायरी	राजकुमार राकेश	595
तीतर फांद	सत्यनारायण पटेल	300
खजाना	मनोज कुमार पांडेय	250
उम्र पैंतालीस बतलाई गयी थी	आशुतोष	200
इब्तिदा के आगे ख़ाली ही	नीलाक्षी सिंह	300
यीशू की कीलें **पुरस्कृत**	किरण सिंह	395
दीनानाथ की चक्की **पुरस्कृत**	अशोक मिश्र	200
आमाज़गाह	मनोज रूपड़ा	200
जंगल में दर्पण **पुरस्कृत**	तरुण भटनागर	200
सुरख़ाब के पंख **पुरस्कृत**	कबीर संजय	250
चॉकलेट फ्रेंड्स और अन्य कहानियां **पुरस्कृत**	शिवेंद्र	300
संपूर्ण कहानियाँ	वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता	595
शीर्षक कहानियाँ	सं. शिरीष कुमार मौर्य	450
खयालनामा	वंदना राग	250
एक दिन मराकेश	प्रत्यक्षा	200
हमकूं मिल्या जियावनहारा	हरभगवान चावला	250
एडवांस स्टडी	राजकुमार राकेश	300
लिटन ब्लॉक गिर रहा है	एस.आर. हरनोट	250
पांच मिनट और अन्य कहानियाँ	योगेन्द्र आहूजा	250
काफिर बिजूका उर्फ इब्लीस	सत्यनारायण पटेल	200

लाल बहादुर का इंजन **पुरस्कृत**	राकेश मिश्र	200
अँधेरे की कोई शक्ल नहीं होती	ज्योति चावला	250
कट टू दिल्ली और अन्य कहानियाँ	उमाशंकर चौधरी	200
सत्यापन	कैलाश वानखेड़े	200
मस्तूलों के इर्दगिर्द	विमल चन्द्र पाण्डेय	250
उजाले अंधेरे	सुधाकर अदीब	250
सफर में अकेली लड़की	जवाहर चौधरी	200
भविष्यदृष्टा **पुरस्कृत**	ओमा शर्मा	300
आइने के पेड़ क्यों नहीं होते	रामेश्वर द्विवेदी	250
मेरी प्रिय विज्ञान कथाएँ	देवेंद्र मेवाड़ी	325
आधार चयन कहानियाँ	एस.आर. हरनोट	300
मिट्टी के लोग **पुरस्कृत**	एस.आर. हरनोट	200
जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ **पुरस्कृत**	एस.आर. हरनोट	200
दारोश तथा अन्य कहानियाँ **पुरस्कृत**	एस.आर. हरनोट	200
नया लिहाफ	रमाकांत शर्मा	225
खेत तथा अन्य कहानियाँ **पुरस्कृत**	रत्नकुमार सांभरिया	250
बीस कहानियाँ	देव निर्मोही	200
श्रेष्ठ कहानियाँ	वरियाम सिंह संधू	200
विशिष्ट मराठी कहानियाँ	दामोदर खड़से	200
गृहस्थी का रजिस्टर	हरीचरन प्रकाश	150
उपकथा का अंत	हरीचरन प्रकाश	150
यह मौसम गुलाबों का नहीं	सुनील सिंह	150
चल खुसरो घर अपने	मनीषा प्रियंवदा	150
सुच्ची डोर	विद्यासागर नौटियाल	150
टिहरी की कहानियाँ	विद्यासागर नौटियाल	100
कांसे का गिलास	सुधा अरोड़ा	125
क्विजमास्टर और अन्य कहानियाँ	पंकज मित्र	125
साउथ ब्लॉक में गांधी **पुरस्कृत**	राजकुमार राकेश	150
बिल्ली नहीं, दीवार	हरि भटनागर	100
सग़ीर और उसकी बस्ती के लोग	हरि भटनागर	100
उधर भी सहरा	हरियश राय	150

मरता हुआ पेड़	शंकर	125
कस्तूरी पहचानो वत्स	जयनन्दन	125
सिद्धार्थ का लौटना	जितेंद्र भाटिया	150
खोज और अन्य कहानियाँ	प्रेमकुमार मणि	100
विश्व के अमर कथाकार पुरस्कृत	सं. अनुराधा महेंद्र	150
तसबीह	मंज़ूर एहतेशाम	150
आधार चयन कहानियाँ	भीष्म साहनी	200
जलपाखी	मनोहर काजल	100
तलछट का कोरस पुरस्कृत	ललित कार्तिकेय	50
दफ़न और अन्य कहानियाँ	मनोज रूपड़ा	80
शर्त है सफ़र पुरस्कृत	जगमोहन कौर	300
रेत का रिश्ता पुरस्कृत	निर्मल जसवाल	200
हीरे की कनी	कमल कपूर	300
भोर का तारा	गुरुदत्त शर्मा	200

कविता संग्रह

यह कैसा समय	सुधीर सक्सेना	350
आईने और असली कद	संजय मिश्र	300
न्यूटन भौंचक्का था	निरंजन श्रोत्रिय	250
चिड़िया की आँख भर रौशनी में	अच्युतानंद मिश्र	300
आद्य नायिका	अरुणाभ सौरभ	200
मैं कहीं और भी होता हूँ	कुंवर नारायण चयन, संपा. रेखा सेठी	495
मुश्किल दिन की बात	शिरीष कुमार मौर्य	200
ध्वनियों के मलबे से	हुकुम ठाकुर	250
फिर वही सैलाब पुरस्कृत	विक्रम मुसाफिर	250
आधार चयन : कविताएँ	मंगलेश डबराल	250
सरे-शाम	असद ज़ैदी	350
अँधेरी गली का चाँद	राणा यशवंत	200
बेघर सपने	निर्मला पुतुल	150
वो तुमसे पूछेंगे डर का रंग	उमाशंकर चौधरी	200
प्रतिनिधि कविताएँ लाल सिंह दिल	अनु. सत्यपाल सहगल	250
सूखी हवा की आवाज़ पुरस्कृत	भूपिन्दर बराड़	150

माँ का जवान चेहरा पुरस्कृत	ज्योति चावला	200
चौराहे पर लोहार	नरेंद्र जैन	200
काला सफ़ेद में प्रविष्ट होता है	नरेन्द्र जैन	150
जो राख होने से बचे हैं अभी तक	ब्रजेश कृष्ण	150
कुंभ में छूटी औरतें पुरस्कृत	हरभगवान चावला	150
दरवाज़ों के बाहर	जयपाल	120
आकाश धरती को खटखटाता है	विनोदकुमार शुक्ल	200
बीता लौटता है पुरस्कृत	मनोज शर्मा	125
जुगलबंदी	निरंजन श्रोत्रिय	100
संपूर्ण कविताएँ	पाश अनु. चमनलाल	450
इस तरह एक अध्याय	नवल शुक्ल	100
रूपिन-सूपिन	प्रमोद कौंसवाल	100
जगत में मेला	अनूप सेठी	120
जहाँ से जन्म लेते हैं पंख	निरंजन श्रोत्रिय	100
संपूर्ण कविताएँ	कुमार विकल	300
मगर एक आवाज़	लीलाधर मंडलोई	100
किसी उम्मीद की तरह	मिथिलेश श्रीवास्तव	80
नीम रोशनी में	मदन कश्यप	80
इन्द्रधनुष के अर्थ	दिनेश जुगरान	120
अवन्नी चवन्नी	प्रदीप कासनी	100
लौटता हूँ उस तक	आग्नेय	60
रात बिरात	लीलाधर मंडलोई	50
वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह	विनोदकुमार शुक्ल	80
नींद से लंबी रात	नवीन सागर	60
आम लोग	शिव रमन	60
कुछ चिट्ठियाँ, कुछ कविताएँ	मारीना त्स्वेतायेवा	35
अपनी ही तरह का आदमी	प्रमोद कौंसवाल	40
अकेला घर हुसैन का पुरस्कृत	निलय उपाध्याय	40
इस घर की किसी खिड़की से	राजीव सभरवाल	40
एक सम्पूर्णता के लिए	पंकज चतुर्वेदी	60

कठिन समय में	अमित मनोज	120
इसी दौर में	ओमसिंह अशफ़ाक	120
कुवार की धूप	सुशील हसरत नरेलवी	150
पानी में आग	दीपक खेतरपाल	150
बात करती है हवा	श्रीनिवास श्रीकांत	100
संत कवयित्री माँ पीरो	संत विजेंद्र दास	325
जंगल जो दरवाजे से शुरू होता है	प्रसून प्रसाद	150
उम्मीद की तरह एक विचार	संजय मिश्र	200
मिट्टी का साहित्य	लव कुमार लव	250

ग़ज़ल/शायरी/रागनी

रोशनी के सुराग़ तक	संजय मिश्र	150
हरियाणवी लोकधारा : प्रतिनिधि रागनियां	सं. सुभाष चंद्र	400
बलबीर राठी की चुनिंदा ग़ज़लें व नज़्में	सं. ओमप्रकाश करुणेश	250
एक जज़ीरा धूप का	रमेन्द्र जाखू	100
बेरंग हैं सब तितलियाँ	कुमार विनोद	100
हवाएं खिलाफ थीं	कुमार साइल	200

रचनावली

जगदीश चंद्र रचनावली (4 खंडों में)	सं. विनोद शाही	4000

रचना संचयन

रामविलास शर्मा संचयिता	सं. मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह	500
मैनेजर पांडेय रचना संचयिता	सं. पंकज पराशर	895
राजेश जोशी संचयिता	सं. डॉ. छबिल कुमार मेहेर	595

आलोचना/गद्य

यादों की किताब	एदुआर्दो गालेआनो अनु. रेयाजुल हक़	495
अनल पाखी (नामवर सिंह की जीवनी)	अंकित नरवाल	725
हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार	संपा देवेंद्र चौबे, अजय कुमार यादव, गणपत तेली	995
कोलाहल में कविता की आवाज़ पुरस्कृत	अच्युतानंद मिश्र	495
साहित्य के नये प्रतिमान	विनोद शाही	550

भक्ति का लोकवृत्त एक इतिहासहन्ता मीमांसा	डॉ सेवा सिंह	595
विमर्श की संगति	प्रमिला के पी	350
दलित स्त्री विमर्श हिंदी आलोचना के प्रतिमान	राम नरेश राम	395
रेत पर पिरामिड : गांधी एक पुनर्विचार	कनक तिवारी	595
हिन्द स्वराज का तत्त्वदर्शन	मनोज कुमार	595
नोबेल पुरस्कार : एशियाई सन्दर्भ	विजय शर्मा	695
गोधूलि की इबारतें	जयशंकर	495
कथा की सैद्धांतिकी	विनोद शाही	450
कथालोचना के प्रतिमान	रोहिणी अग्रवाल	495
आलोचना की पक्षधरता	विनोद तिवारी	595
भूमंडलोत्तर कहानी	राकेश बिहारी	350
ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और इतिहासदृष्टि	मधुरेश	995
रामचरित मानस की पांडुलिपियाँ : ज्ञात-अज्ञात तथ्य	उदयशंकर, विजयनाथ	495
यू.आर. अनन्तमूर्ति : प्रतिरोध का विकल्प	अंकित नरवाल	495
महादेवी वर्मा : मूल्य और मूल्यांकन	सं. छबिल कुमार मेहेर	350
हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी	विनोद शाही	550
हिंदी साहित्य का इतिहास : एक उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श	विनोद शाही	595
कई उम्रों की कविता	शिरीष कुमार मौर्य	300
बाज़ार के अरण्य में	अच्युतानंद मिश्र	250
हिंदी कहानी का समकाल	अंकित नरवाल	300
भक्ति और भक्ति आंदोलन	डॉ. सेवा सिंह	495
साहित्य और समाजशास्त्रीय दृष्टि	मैनेजर पांडेय	595
हिन्दी उपन्यास : समय से संवाद	रोहिणी अग्रवाल	350
राम की शक्तिपूजा : काव्य व्याख्या और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. डॉ. छबिल कुमार मेहेर	550
अँधेरे में : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. छबिल कुमार मेहेर	400
असाध्य वीणा : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. छबिल कुमार मेहेर	350
समय के बीज-आख्यान	विनोद शाही	300
निराशा में भी सामर्थ्य	पंकज चतुर्वेदी	500

शताब्दी का प्रतिपक्ष	वैभव सिंह	300
भारतीय उपन्यास और आधुनिकता **पुरस्कृत**	वैभव सिंह	350
पुनर्वाचन	पंकज पराशर	250
खिड़की के पास कवि	विजय कुमार	350
कविता की संगत **पुरस्कृत**	विजय कुमार	300
आलोचना की जमीन	विनोद शाही	450
आलोचना का जनतंत्र	देवेंद्र चौबे	550
कहानी का लोकतंत्र **पुरस्कृत**	पल्लव	250
पूर्वाग्रहों के विरुद्ध **पुरस्कृत**	प्रियम अंकित	300
उत्तरऔपनिवेशिक विमर्श और हिंदी कविता	पी. रवि	300
समकालीन हिंदी कविता	इरशाद कामिल	350
विमर्श में कबीर	उमाशंकर चौधरी	200
मार्क्सवादी आलोचना और शिवदान सिंह चौहान	मधुरेश	250
जगदीशचंद्र : दलित जीवन के उपन्यासकार	सं. चमन लाल	250
शील और सौंदर्य	रमेश कुंतल मेघ	300
समकालीन कथा साहित्य **पुरस्कृत**	रोहिणी अग्रवाल	350
तुलसी : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. अजय तिवारी	400
कबीर : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. बलदेव वंशी	400
यशपाल : रचनात्मक पुनर्वास	मधुरेश	350
जयशंकर : एक पुनर्मूल्यांकन	विनोद शाही	300
मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. पल्लव	550
निराला : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. ए. अरविंदाक्षन	200
बाणभट्ट की आत्मकथा : पाठ-पुनर्पाठ	सं. मधुरेश	450
तमस : एक पुनर्पाठ	सं. विनोद शाही	250
मैला आंचल : वादविवाद	सं. भारत यायावर	300
निराला का काव्य	डॉ. बच्चन सिंह	150
अज्ञेय का काव्य	प्रणय कृष्ण	100
शोध प्रविधि	डॉ. मैथिली भारद्वाज	200
कवियों की पृथ्वी **पुरस्कृत**	अरविंद त्रिपाठी	250
साहित्य का समकोण	ओमा शर्मा	250

आलोचक और आलोचना	कमला प्रसाद	300
लेखक की रोटी	मंगलेश डबराल	150
मोहन राकेश के नाटक : मूल्यांकन	प्रसून प्रसाद	200
आलोचना की धार	चन्द्रभूषण तिवारी	200
हिन्दी कहानी : अस्मिता की तलाश	मधुरेश	495
कबीर की उलटबांसियां	डॉ. प्रभा गुप्ता	300
बावा बलवंत और नागार्जुन	डॉ. गगनदीप कौर	300
गुरदयाल सिंह और नागार्जुन उपन्यास	डॉ. कुलवंत सिंह	250

निबन्ध/वैचारिक लेख/अर्थ

पतंजलि योगदर्शन	विनोद शाही	595
भारत : एक आत्मसंघर्ष	वैभव सिंह	400
1857 का महासंग्राम	सं. बद्रीनारायण, रश्मि	500
हिन्दी नवजागरण और जातीय गद्य परंपरा	कर्मेन्दु शिशिर	300
रामकथा : एक पुनर्पाठ	विनोद शाही	300
प्राच्यवाद और प्राच्य भारत	विनोद शाही	300
इतिहास और राष्ट्रवाद	वैभव सिंह	350
मार्क्सवाद और साहित्यालोचन	टेरी ईगलटन अनु. वैभव सिंह	150
प्रकृति, मनुष्य और राज्य	गुरबचन सिंह	300
महास्वप्न का अवसान	राजकुमार राकेश	300
मैं जो देखती हूँ	महाश्वेता देवी	120
कला विमर्श	अवधेश मिश्र	550
उपरांत	वाल्टर बैंजामिन	150
वित्तीय पूंजी तथा उत्तर आधुनिक	राजेश्वर सक्सेना	180
भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज	सं. चमन लाल	595
भगतसिंह : इंकलाबी चिंतन के दस्तावेज	सं. विनोद शाही	300
गांधी का अहिंसक इंकलाब और हिंद स्वराज	सं. विनोद शाही	250
अनंत का छंद	प्रसन्न कुमार चौधरी	100
संघर्ष का उन्मेष और रूपांतरण	जौहन गैलतुंग	250
आर्यसमाज का इतिहास **पुरस्कृत**	डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी	500

दलित विमर्श/संस्कृति/समाज

जनवादी समाज और जाति का उन्मूलन	आनंद तेलतुंबड़े सं. रूबीना सैफी	400
वारिस शाह : समय और पाठ	विनोद शाही	695
अंबेडकर चिंतन और हिंदी दलित साहित्य	पी.एन. सिंह	300
ब्राह्मणवाद और जनविमर्श	डॉ. सेवा सिंह	395
दलित समाज और संस्कृति	तेज सिंह	250
दलित विमर्श : कुछ मुद्दे कुछ सवाल	उमाशंकर चौधरी	250
दलित मुक्ति आंदोलन	डॉ. सुभाष चंद्र	150
दलित मुक्ति की विरासत : संत रविदास पुरस्कृत	डॉ. सुभाष चंद्र	250
साझी संस्कृति की विरासत	डॉ. सुभाष चंद्र	200
बुल्लेशाह : समय और पाठ	विनोद शाही	400
हरियाणा का समाज और सत्ता	राजकुमार भारद्वाज	250
पंचायती राज : हाशिये से हुकूमत तक	सुधीर पाल/रणेन्द्र	350
ग्राम सभा : नए लोकतंत्र की दस्तक	सुधीर पाल	250

पत्रकारिता/मीडिया/सिनेमा

कला का आस्वाद	मनोज रूपड़ा	250
तमाशा मेरे आगे	आनंद प्रधान	450
सीढ़ियां चढ़ता मीडिया पुरस्कृत	माधव हाड़ा	250
मीडिया, इतिहास और हाशिए के लोग	अजय कुमार सिंह	150
इनसाइड लाइव	लीलाधर मंडलोई	180
जनसंचार का समाजशास्त्र	लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा	250
मीडिया और समाज	लक्ष्मेन्द्र चोपड़ा	250
मृणालसेन का छायालोक	कृपाशंकर चौबे	100

अनुवाद विज्ञान/भाषा विज्ञान

राजभाषा हिन्दी : इतिहास से व्यवहार तक	गोपाल प्रसाद	250
राजभाषा हिन्दी : कल, आज और कल	सुरेन्द्र शर्मा	300
पद्यात्मक व्याकरण	रामलषण प्रसाद	150

स्त्री/आदिवासी विमर्श

वमर्श की संगति	प्रमिला के पी	350
दलित स्त्री विमर्श हिंदी आलोचना के प्रतिमान	राम नरेश राम	395
गूंगे इतिहासों की सरहदों पर	सं. सुबोध शुक्ल	500
हाशिए का वृत्तांत	सं. दीपक, देवेंद्र चौबे	595
त्रिया चरित्रं : उत्तर कांड	अनामिका	250
भारतीय महिलाओं की दशा	सुभाष शर्मा	550
ताबेन जोम	वासवी	250
नारीवादी विमर्श	राकेश कुमार	250
हिन्दुस्तान के ससुर	शमीम शर्मा	160
तपती पगडंडियों के राही	रेणुका नैयर	200
किन्नौर : आदिवासिक संस्कृति के आर्थिक आधार	देवेंद्र गोलदार नेगी	995

विज्ञान/पर्यावरण/ललित निबंध

जल मांगता जीवन	पंकज चतुर्वेदी	300
लोक में ऋतु	राजकिशन नैन	200
विज्ञाननामा	देवेंद्र मेवाड़ी	400
विज्ञान प्रसंग	देवेंद्र मेवाड़ी	300
मेरी विज्ञान डायरी भाग–1	देवेंद्र मेवाड़ी	350
मेरी विज्ञान डायरी भाग–2	देवेंद्र मेवाड़ी	350

शैक्षिक चिंतन एवं संवाद श्रृंखला

डेविड ऑसबरॉ और नीलबाग स्कूल	राजाराम भादू	150
शिक्षा और समझ	रोहित धनकर	200
लोकतंत्र, शिक्षा और विवेकशीलता	सं. रोहित धनकर	250
शिक्षा के सामाजिक सरोकार	राजाराम भादू	200
शिक्षा के संदर्भ और विकल्प	सं. रोहित धनकर/राजाराम भादू	200
बिहार में स्कूली शिक्षा	डॉ. बाल्मीकि महतो	200
प्रारंभिक शिक्षा की चुनौतियां	डॉ. बाल्मीकि महतो	250
शिक्षा, समानता और समाज	डॉ. बाल्मीकि महतो	250
मुख्यधारा शिक्षा में दलित भेद	सं. भरत, राजाराम भादू	250

यात्रा डायरी

नाज़िम हिकमत के देश में	विनोद तिवारी	200
तैमूर तुम्हारा घोड़ा किधर है	प्रत्यक्षा	250
मेक्सिको : एक घर परदेश में	श्रीकान्त दुबे	250
अंतरयात्राएँ : वाया वियना	ओमा शर्मा	350
क्रिस्टेनिया मेरी जान	उर्मिलेश	200
दिल्ली से तुंगनाथ वाया नागनाथ	देवेंद्र मेवाड़ी	350

आत्मकथा/जीवनी/संस्मरण/साक्षात्कार

विलक्षण यात्री : गाब्रिएल ग्रासिया		
मार्केज से रचनात्मक मुठभेड़	राजकुमार राकेश	495
मेरा जीवन (आत्मकथा)	चार्ली चैप्लिन अनु. सूरज प्रकाश	750
वो गुज़रा जमाना	स्टीफन स्वाइग अनु. ओमा शर्मा	550
ये इश्क़ नहीं आसां	जंगबहादुर गोयल	450
क्या जानूँ मैं कौन पुरस्कृत	गुरदयाल सिंह	495
मेरे दिन मेरे वर्ष (स्मृतिकथा)	एकांत श्रीवास्तव	150
संवेदना के सप्तसिंधु स्वामी विवेकानंद	जंग बहादुर गोयल	300
उपकथन : पंद्रह संवाद	मंगलेश डबराल	300
नामवर की धरती	श्रीप्रकाश शुक्ल	150
राहुल : एक राजनीतिक सफरनामा	जतिन गांधी, वीनू संधु	395
करुणामूर्ति मदर टेरेसा	कृपाशंकर चौबे	100
महाअरण्य की मां	कृपाशंकर चौबे	100
शरारतें	डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी	300
भगवान परशुराम	रजनीश कौशिक	350

नाटक/व्यंग्य

सुबह के इंतजार में पुरस्कृत	राजेंद्र श्रीवास्तव	200
प्रतिनिधि नाटक	गुरशरण सिंह	450
श्रेष्ठ बाल नाटक	अमृतलाल मदान	200
उत्सव आमार जाति आनंद आमार गोत्र	अभिलाष/भट्ट	80
गर्म कोट	राजेन्द्र धोड़पकर	40
झोपड़पट्टी	राजेश/किशोर	40

जनता सोच रही है	गुरदत्त शर्मा	150
परमात्मा हाज़िर हो	आई.जे. नाहल	150
मैं पढ़ा जा चुका पत्र	नंदकिशोर नवल	250

मनोविज्ञान

बच्चों की मनोवैज्ञानिक समस्याएं	डॉ. हरशिंदर कौर	250
बच्चों संबंधी ज्ञान, विज्ञान और मनोविज्ञान	डॉ. हरशिंदर कौर	350
न्यारी दुनिया	प्रदीप्त कुमार जेना	150

व्यक्तित्व विकास/स्वास्थ्य/प्रबंधन

व्यक्तित्व विकास : सफलता की गारंटी	डॉ. पुष्पकुमार शर्मा	250
संतुलित आहार : संपूर्ण जानकारी	डॉ. हरशिंदर कौर	400
योगासन सुधा	डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी	200
डॉक्टर को दूर रखने का फार्मूला	पुष्पकुमार शर्मा	200
सफल स्वस्थ जीवन के 7 गुरुमंत्र पुरस्कृत	पुष्पकुमार शर्मा	200
प्राकृतिक चिकित्सक की डायरी	पुष्पकुमार शर्मा	250
कम्यूनिकेशन और बॉडी लैंग्वेज	पुष्पकुमार शर्मा	250
स्व प्रबंधन	पुष्पकुमार शर्मा	300
प्रबंधन : विविध आयाम	रमाकांत शर्मा	300
क्रिएटिविटी	हरवंश दुआ	250
अलादीन का चिराग है मन	हरवंश दुआ	250
सफलता के ग्यारह कदम	हरवंश दुआ	300

बैंकिंग

बैंकिंग : कल, आज और कल	सं. डॉ. रमाकांत गुप्ता	300
आधुनिक बैंकिंग और जोखिम प्रबंधन	सं. डॉ. रमाकांत गुप्ता	350
बैंकों में ग्राहक सेवा	सं. डॉ. रमाकांत गुप्ता	500
भारतीय कृषि में उभरते अवसर व प्रवृत्तियां	एन.जयराम, अरुण श्रीवास्तव	350
ग्राहक सेवा : मनोवैज्ञानिक पहलू	अरुण श्रीवास्तव, सविता शर्मा	350
बैंकिंग और वित्तीय परिभाषा कोश	सं. पु.कु. शर्मा, कृ.प्र. तिवारी	350

पूंजी पर्याप्तता एवं बासेल मानक	सं. रमाकांत गुप्ता, सावित्री सिंह	300
बैंकों में मानव संसाधन प्रबंधन	संदीप कुमार घोषाल	200
बैंकिंग उद्योग क्षेत्र में उत्पादकता...	सं. मीना हेमचंद्र, विवेक मैंदर्गी	350
ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास और बैंक	प्रतिभू बनर्जी	350
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम	सं. रमाकांत गुप्ता, सावित्री सिंह	350
विदेशी मुद्रा कारोबार	ए.सी.सूरी, एस.एन.शर्मा	395
सहकारी बैंकिंग	पुष्पकुमार शर्मा, सावित्री सिंह	300
विश्वव्यापी आर्थिक संकट	सं. पुष्पकुमार शर्मा	250
तुलनपत्र का विश्लेषण एवं कार्यशील पूंजी	रविनाथ टंडन	250
नए क्षितिज, नई दिशाएं	राजीव रंजन शर्मा	200
वित्तीय समावेशन के विविध आयाम	पी. कुमार, रूपम मिश्र,	300
बैंकों में हिन्दी : विविध आयाम	डॉ. दामोदर खड़से	250
ग्रामीण और विकासोन्मुख बैंकिंग	दीपाली पंत जोशी, पुष्पकुमार शर्मा	300
अनिवासी भारतीय जमाखाता: एक परिचय	जान्हवी जोगलेकर,एस. पटवर्धन	225
रुग्ण कृषि, विपन्न किसान कृषि बैंकिंग	श्यामलाल गौड़	350
समय प्रबंधन और संगठनात्मक विकास	सावित्री सिंह	300
ऋण जोखिम प्रबंधन	दिलीप मेहरा	250
माइक्रोफाइनैंस	डॉ. जयप्रकाश मिश्र	400
लघु वित्त : विविध आयाम	हारून खान, सूरज प्रकाश	225
भारत में भुगतान एवं निपटान प्रणाली	सुब्रहमणियम, पुष्पकुमार शर्मा	225
म्युचुअल फंड और मझौले निवेशक	रमाकांत गुप्ता, सविता	300
कार्ड बैंकिंग	डॉ. रमाकांत शर्मा	250
भारतीय बैंकिंग : बदलता परिदृश्य	श्यामलाल गौड़	300
रिटेल बैंकिंग : विविध आयाम	हारून खान, सूरज प्रकाश	225
भारत में बैंकों में बेहतर कंपनी संचालन	डॉ. रामप्रकाश सिंहल	300
बैंकिंग व्यवसाय और पूंजी पर्याप्तता	आर.के. मूलचंदानी	200
रिटेल बैंकिंग और मार्केटिंग	सुब्रहमणियम, पुष्पकुमार शर्मा	250
कार्मिक प्रबंधन	डॉ. सुभाष गौड़	450
भारत में ग्रामीण बीमा	अमरीश सिन्हा	300

आधार पेपरबैक्स

उपन्यास

ईश्वर के बीज	विनोद शाही	200
सुल्फी यार	अमित ओहलाण	250
गली हसनपुरा	रजनी मोरवाल	150
भटकती रूह की स्मृतियाँ	मिखाइल नईमी अनु. जंगबहादुर गोयल	150
गैडफ्लाई	ईथल लिलियन वायोनिच अनु. जंगबहादुर गोयल	295
ज़ोरबा द ग्रीक	निकोस कज़ानज़ाकिस अनु. जंगबहादुर गोयल	295
राजा, जंगल और काला चाँद	तरुण भटनागर	295
बारिशगर	प्रत्यक्षा	180
चंचला चोर	शिवेंद्र	200
अंधेरा कोना	उमाशंकर चौधरी	160
शिलावहा	किरण सिंह	100
प्रार्थना में पहाड़	भालचंद्र जोशी	200
श्रीवन	विक्रम मुसाफ़िर	150
मेरा यार मरजिया	अमित ओहलाण	200
लाल गुस्से के अंगूर **नोबल पुरस्कार**	जॉन स्टाइनबेक अनु. राजकुमार राकेश	295
हलफ़नामा	शैलेय	120
कलिकथा : वाया बाइपास	अलका सरावगी	150
कंदील	राजकुमार राकेश	200
गांव भीतर गांव	सत्यनारायण पटेल	250
अन्हियारे तलछट में चमका **पुरस्कृत**	अल्पना मिश्र	100
ये दिये रात की ज़रूरत थे	कविता	100
भले दिनों की बात थी	विमल चंद्र पाण्डेय	200
लौटती नहीं जो हंसी **पुरस्कृत**	तरुण भटनागर	80
इक़बाल	जयश्री रॉय	120
मगहर की सुबह	वंदना शुक्ल	80
कायर **पुरस्कृत**	स्टीफन स्वाइग अनु. अनुराधा	250
अंधे घोड़े का दान **पुरस्कृत**	गुरदयाल सिंह	120

परसा पुरस्कृत	गुरदयाल सिंह	80
मुकदमा	फ्रेंज़ काफ़्का अनु. राजकुमार राकेश	200
खिलेगा तो देखेंगे	विनोदकुमार शुक्ल	180
निर्वासित प्रेतों की जीवनी	राजकुमार राकेश	100
हवेली से बाहर पुरस्कृत	राजकुमार राकेश	200
धरती धन न अपना	जगदीश चन्द्र	250
कभी न छोड़ें खेत	जगदीश चन्द्र	150
जमीन अपनी तो थी	जगदीश चन्द्र	150
नरककुंड में बास	जगदीश चन्द्र	200
घास गोदाम	जगदीश चन्द्र	250
मुट्ठी भर कांकर	जगदीश चन्द्र	195
लाट की वापसी	जगदीश चन्द्र	180
आधा पुल	जगदीश चन्द्र	195

कहानी संग्रह

अश्वमेध तथा अन्य कहानियाँ	राजकुमार राकेश	295
कैंसरवार्ड	राजकुमार राकेश	150
बचपन की बारिश और अन्य कहानियाँ	जयशंकर	180
प्रलय में नाव	तरुण भटनागर	150
प्रतिनिधि कहानियाँ	जयशंकर	250
प्रतिनिधि कहानियाँ	राजेंद्र श्रीवास्तव	200
छप्पन छुरी बहत्तर पेंच	रणेन्द्र	120
साज़-नासाज़	मनोज रूपड़ा	150
टावर ऑफ सायलेंस	मनोज रूपड़ा	150
लफ्फाज़ और अन्य कहानियाँ	योगेंद्र आहूजा	180
दुश्मन मेमना	ओमा शर्मा	180
कालजयी कहानियां	स्टीफन स्वाइग अनु. ओमा शर्मा	295
कारोबार और अन्य कहानियाँ	ओमा शर्मा	180
अँधेरे में हँसी	योगेंद्र आहूजा	180
नागरी सभ्यता	राकेश मिश्र	120
रज्जब अली	हेमंत कुमार	180
आपात्काल डायरी	राजकुमार राकेश	250

तीतर फांद	सत्यनारायण पटेल	150
खजाना	मनोज कुमार पांडेय	120
उम्र पैंतालीस बतलाई गयी थी	आशुतोष	120
इब्तिदा के आगे ख़ाली ही	नीलाक्षी सिंह	150
यीशू की कीलें	किरण सिंह	200
आमाज़गाह	मनोज रूपड़ा	80
सुरख़ाब के पंख पुरस्कृत	कबीर संजय	120
चॉकलेट फ्रेंड्स और अन्य कहानियां	शिवेंद्र	200
शीर्षक कहानियां	सं. शिरीष कुमार मौर्य	200
लिटन ब्लॉक गिर रहा है	एस.आर. हरनोट	120
सत्यापन	कैलाश वानखेड़े	80
भविष्यदृष्टा पुरस्कृत	ओमा शर्मा	150
आधार चयन कहानियां	गुरदयाल सिंह	80
आधार चयन कहानियां	अंतोन चेखव	80
आधार चयन कहानियां	प्रेमचंद	80
आधार चयन कहानियां	यशपाल	80
आधार चयन कहानियां	भीष्म साहनी	100
विश्व के अमर कथाकार	सं. अनुराधा महेन्द्र	100

कविता संग्रह

न्यूटन भौंचक्का था	निरंजन श्रोत्रिय	120
चिड़िया की आँख भर रौशनी में	अच्युतानंद मिश्र	150
मैं कहीं और भी होता हूँ	कुंवर नारायण संपा. रेखा सेठी	250
आधार चयन : कविताएं	मंगलेश डबराल	120
संपूर्ण कविताएं	पाश, अनु. चमनलाल	250
राजेश जोशी संचयिता	सं. डॉ. छबिल कुमार मेहेर	295

ग़ज़ल/शायरी/रागनी

रोशनी के सुराग़ तक	संजय मिश्र	80
हरियाणवी लोकधारा:प्रतिनिधि रागनियां	सं. सुभाष चंद्र	200

आलोचना/गद्य

यादों की किताब	एदुआर्दो गालेआनो अनु. रेयाजुल हक़	295
अनल पाखी (नामवर सिंह की जीवनी)	अंकित नरवाल	350
हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार	संपा देवेंद्र चौबे, अजय कुमार यादव, गणपत तेली	450
कोलाहल में कविता की आवाज़ पुरस्कृत	अच्युतानंद मिश्र	250
साहित्य के नये प्रतिमान	विनोद शाही	250
भक्ति का लोकवृत्त एक इतिहासहन्ता मीमांसा	डॉ सेवा सिंह	295
विमर्श की संगति	प्रमिला के पी	180
दलित स्त्री विमर्श हिंदी आलोचना के प्रतिमान	राम नरेश राम	200
रेत पर पिरामिड : गांधी एक पुनर्विचार	कनक तिवारी	295
हिन्द स्वराज का तत्त्वदर्शन	मनोज कुमार	295
नोबेल पुरस्कार : एशियाई सन्दर्भ	विजय शर्मा	350
गोधूलि की इबारतें	जयशंकर	250
कथा की सैद्धांतिकी	विनोद शाही	250
कथालोचना के प्रतिमान	रोहिणी अग्रवाल	250
आलोचना की पक्षधरता	विनोद तिवारी	295
भूमंडलोत्तर कहानी	राकेश बिहारी	180
ऐतिहासिक उपन्यास : इतिहास और इतिहास-दृष्टि	मधुरेश	450
हिंदी आलोचना की सैद्धांतिकी	विनोद शाही	250
समय के बीज-आख्यान	विनोद शाही	120
हिंदी साहित्य का इतिहास : एक उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श	विनोद शाही	250
भक्ति और भक्ति आंदोलन	डॉ. सेवा सिंह	250
साहित्य और समाजशास्त्रीय दृष्टि	मैनेजर पांडेय	250
हिन्दी उपन्यास : समय से संवाद	रोहिणी अग्रवाल	180
राम की शक्तिपूजा : काव्य व्याख्या और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. छबिल कुमार मेहेर	250
महादेवी वर्मा : मूल्य और मूल्यांकन	सं. डॉ. छबिल कुमार मेहेर	180

अंधेरे में : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. छबिल कुमार मेहेर	200
असाध्य वीणा : पाठ और आलोचनात्मक संदर्भ	सं. छबिल कुमार मेहेर	180
तुलसी : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. अजय तिवारी	150
कबीर : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. बलदेव वंशी	150
यशपाल : रचनात्मक पुनर्वास	मधुरेश	150
जयशंकर : एक पुनर्मूल्यांकन	विनोद शाही	120
मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. पल्लव	200
निराला : एक पुनर्मूल्यांकन	सं. ए. अरविंदाक्षन	120
बाणभट्ट की आत्मकथा : पाठ-पुनर्पाठ	सं. मधुरेश	150
तमस : एक पुनर्पाठ	सं. विनोद शाही	120
मैला आंचल : वादविवाद	सं. भारत यायावर	120

निबन्ध/वैचारिक लेख/अर्थ

पतंजलि योगदर्शन	विनोद शाही	295
भारत : एक आत्मसंघर्ष	वैभव सिंह	200
प्राच्यवाद और प्राच्य भारत	विनोद शाही	120
भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज	सं. चमन लाल	200

दलित विमर्श/संस्कृति/समाज

ग्राम सभा : नए लोकतंत्र की दस्तक	सुधीर पाल	250
जनवादी समाज और जाति का उन्मूलन	आनंद तेलतुंबड़े सं. रूबीना सैफी	250
वारिस शाह : समय और पाठ	विनोद शाही	295
ब्राह्मणवाद और जनविमर्श	डॉ. सेवा सिंह	200
दलित मुक्ति की विरासत : संत रविदास पुरस्कृत	डॉ. सुभाष चंद्र	80

आत्मकथा/जीवनी/संस्मरण/साक्षात्कार/स्त्री विमर्श

ये इश्क़ नहीं आसां	जंगबहादुर गोयल, नीलम गोयल	200
गूंगे इतिहासों की सरहदों पर	सं. सुबोध शुक्ल	250
कला का आस्वाद	मनोज रूपड़ा	150
विलक्षण यात्री : गाब्रिएल ग्रासिया		

मार्केज से रचनात्मक मुठभेड़	राजकुमार राकेश	250
अंतरयात्राएँ : वाया वियना	ओमा शर्मा	180
दिल्ली से तुंगनाथ वाया नागनाथ	देवेंद्र मेवाड़ी	180
मेरा जीवन (आत्मकथा)	चार्ली चैप्लिन अनु. सूरज प्रकाश	350
वो गुज़रा जमाना	स्टीफन स्वाइग अनु. ओमा शर्मा	295
राहुल : एक राजनीतिक सफरनामा	जतिन गांधी, वीनू संधु	200

नाटक

प्रतिनिधि नाटक	गुरशरण सिंह	200
झोपड़पट्टी	राजेश, किशोर	40

व्यक्तित्व विकास/स्वास्थ्य/प्रबंधन

संतुलित आहार : संपूर्ण जानकारी	डॉ. हरशिंदर कौर	195
प्राकृतिक चिकित्सक की डायरी	पुष्पकुमार शर्मा	120
क्रिएटिविटी	हरवंश दुआ	150
अलादीन का चिराग है मन	हरवंश दुआ	120
सफलता के ग्यारह कदम	हरवंश दुआ	150

बाल साहित्य

फ़सलें कहें कहानी **पुरस्कृत**	देवेन्द्र मेवाड़ी	60
चुनिंदा बाल कथाएं	गिजु भाई	50
चुनिंदा रोचक कथाएं	गिजु भाई	50
पगला दासु	सुकुमार राय	40
हमारे आसपास पर्यावरण	निरंजन श्रोत्रिय	30
अंतरिक्ष नगर	प्रदीप मिश्र	60
श्रेष्ठ बाल एकांकी	अमृत लाल मदान	60
काली और कलंदर	अशोक अग्रवाल	30
चिरी की नानी	अशोक अग्रवाल	30
नदी का पानी तुम्हारा है	नवल शुक्ल	40
बजरंग पांडे के पाड़े	हरि भटनागर	20
लोग उड़ेंगे	वर्जीनिया हैमिल्टन	20
काबुली वाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15

भारतीय ज्ञानीठ पुरस्कार सम्मान से सम्मानित साहित्यकारों की कृतियां

आत्मकथा

क्या जानूं मैं कौन **गुरदयाल सिंह** **495.00**

अभी तक भारतीय लोगों को धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तौर पर यही बताया जा रहा है कि उनकी नियति का संबंध किसी अलौकिक शक्ति से है। उसकी इच्छानुसार करोड़ों दलित, उत्पीड़ित लोग एक तरह का ही जीवन जीकर चले जाते हैं, परंतु यह सत्य नहीं है। लौकिक व्यवस्था इसकी जिम्मेवार है। लोग उसी से यह प्रश्न पूछना चाहते हैं। आत्मकथा में यही सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि जो लागे एक नहीं, दो 'देहियां' भी भोग पाते हैं, उन्हें इसके लिए कितना मोल चुकाना पड़ता है, जो गुरदयाल सिंह जैसे लोगों को अदा करना पड़ा। यहां आप यह देख पायेंगे।

उपन्यास

अंधे घोड़े का दान **गुरदयाल सिंह** **250.00**

भारत में दलित विमर्श की जड़ें मिथकों के समय तक फैली हुई हैं। गुरदयाल सिंह जैसे समर्थ रचनाकार के वश की ही बात है कि वे अपनी सामाजिक चिन्ताओं के साथ भारत के पूरे सांस्कृतिक इतिहास की जड़ों में उतर सके हैं। *अंधे घोड़े का दान* एक उपन्यास के रूप में समकालीन यथार्थ के अन्तर्विरोधों को ही सामने नहीं लाता, वह उस समय तक भी पीछे की ओर लौटता है जहां से हमारा वर्ण और जातिमूलक विभाजन आरम्भ हुआ था। यह कालजयी उपन्यास इस पूरे सामाजिक अन्त:संघर्ष को गांव की एक कथा के रूप में सामने लाता है जहाँ विस्थापन भी है, शहर की नारकीय छाया भी है और परम्परागत जीवन शैली का विनाश भी है। अगर हमें अपने समय को सही अर्थ में समझना है तो इस उपन्यास को पढ़े बिना हम हालात के मर्म को नहीं समझ पायेंगे।

भर सरवर जब उच्छलै **गुरदयाल सिंह** **495.00**

पंजाब की किसानी और दलित 'वेहड़ों' के आपसी रिश्तों के साथ-साथ कस्बों-नगरों तक अपने कथानकों का विस्तार करते गुरदयाल सिंह ने 'भर सरवर जब ऊच्छलै' में सीधे इतिहास में छलांग लगाने की कोशिश पहली दफ़ा की है। इससे पहले वे 'मढ़ी का दीवा' तथा 'परसा' में अपने समय से उठकर पीछे लोकचेतना में मौजूद आख्यानों और मिथकों तक का सफर तय करते रहे हैं, पर यहां यह एक बेजोड़ उपन्यास हमारे सामने है जिसमें वे सम-समय और लोककथाओं व मिथकों को जोड़ने वाली 'इतिहास' नामक कड़ी में रचना

समाधि लगाते हैं। इतिहास एक ठोस वस्तु है जिसे केवल रचनाकार तरल बनाकर लोकचेतना में प्रवेश करने लायक बनाता है। यहां गुरदयाल सिंह यही कर रहे हैं और इसीलिए उनके बहुत लंबे समय में रचित इस उपन्यास को एक लंबे समय तक याद रखा जायेगा।

पांचवां पहर **गुरदयाल सिंह** **250.00**

भारत के आधुनिक होने की प्रक्रिया में जिस मध्यवर्ग की सबसे बड़ी भूमिका है, उसे मध्यवर्ग बनाने वाली संस्थाएँ हमारे शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ी हैं। परन्तु यह गुरदयाल सिंह जैसा कथाकार ही देख सकता है कि भारत में आधुनिक शिक्षा पाकर आगे बढ़ने वाला मध्यवर्ग गहरे में अपनी परम्परागत धर्म संस्थाओं से वास्तविक चेतना को पाता है।

परसा **गुरदयाल सिंह** **395.00**

'परसा' एक महाकाव्यात्मक कृति है। ऐसी कृति का सृजन तभी संभव हो पाता है जब कोई कौम, समुदाय जीवन के ऐसे मोड़ पर पहुंच पाता है जहां से वह अपने पूरे भूतकाल की उपलब्धियों को सही-सही आंकने की स्थिति में हो और इन उपलब्धियों को भविष्य के मार्ग को उज्जवल करने के लिए ग हन नज़रों से देखने, जानने तथा समझने के योग्य हो पाए। 'परसा' पंजाब के उस मालवा खंड की कथा कहता है जहां के लोगों ने अंग्रेज जैसी बलवान हकूमत के आगे भी सिर नहीं झुकाया था। यह उपन्यास उसी संस्कृति की स्वतंत्र आत्मा की मशाल जगाए रखने का बहुत सफल प्रयास है।

अध-चांदनी रात **गुरदयाल सिंह** **125.00**

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत इस उपन्यास में गुरदयाल सिंह ने ग्रामीण संस्कृति में कत्ल की घटना को नये दृष्टिकोण से देखा है। पंजाब की लोक-संस्कृति को उजागर करने वाला यह उपन्यास हमारी मानवीय सहानुभूति को व्यापक बनाता है और हमें मानव-विडंबना से अवगत कराता है।

मढ़ी का दीवा **गुरदयाल सिंह** **200.00**

गुरदयाल सिंह के इस उपन्यास को सही मायने में भारतीय ग्रामीण जीवन की दुखांतकी कहा जा सकता है। जगसीर इसका केन्द्रीय चरित्र है। इसके माध्यम से लेखक ने यदि एक और अमीरी गरीबी और जातीय ऊंच-नीच पर मानवीय रिश्तों को तरजीह दी है तो दूसरी ओर पूंजीवादी अर्थवाद की चपेट में उन्हें ध्वस्त होते दिखाया है।

मैं जो देखती हूं **महाश्वेता देवी** **120.00**

महाश्वेता देवी ने लेखक होने के नाते नहीं, व्यक्ति होने के नाते भी सदियों से हाशिये पर पड़े आदिवासियों की व्यथा-कथा को वाणी दी है। उनके उत्पीड़न का मार्मिक एहसास इस पुस्तक के अनेक लेखों में भी महाश्वेता कराती हैं।

आधार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
नयी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

आत्मकथा

मेरा जीवन **चार्ली चैप्लिन** अनु. सूरज प्रकाश **750.00**

यह आत्मकथा एक महाकाव्य है एक ऐसे शख्स के जीवन का, जिसने दिया ही दिया है और बदले में सिर्फ वही मांगा जो उसका हक था। उसे अपने आप पर, अपने फैसलों पर, अपनी कला पर और अपनी अभिव्यक्ति शैली पर विश्वास था और उस विश्वास के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता भी थी। उन्होंने आजीवन हंसाने का काम किया दुनिया भर के लिए। चार्ली का पूरा जीवन उतार-चढ़ावों से भरा रहा है। उनका बचपन बेहद गरीबी में गुजरा। मात्र आठ बरस की उम्र से उन्हें बहुत से काम-धंधे करने पड़े। उन्होंने जीवन की किताब को शुरू से आखिर तक कई बार पढ़ा था। उन्हें मनोविज्ञान की गहरी समझ थी। इस आत्मकथा में उन्होंने अमूमन सब कुछ पर लिखा है और बेहतरीन लिखा है।

वो गुजरा जमाना **स्टीफन स्वाइग** अनु. ओमा शर्मा **550.00**

बीसवीं सदी के महानतम ऑस्ट्रियाई लेखक स्टीफन स्वाइग (1881-1942) की यह आत्मकथा विश्व साहित्य की अनन्य घटना है। आत्म के हर चालू मुहावरे से परहेज करती 'वो गुजरा जमाना' अपने समय का ऐसा आख्यान रचती है कि यह लेखक की आप-बीती न होकर पूरे दौर के मूल्यों, अन्तर्विरोधों और लाचारियों का दस्तावेज बन जाती है। मूल जर्मन में यह आत्मकथा, स्वाइग की मृत्यु के बाद, 1943 में छपी थी। तब से यह विश्व की लगभग हर भाषा में अनूदित हो चुकी है। हिन्दी में पहली बार। लेखकी से सम्बद्ध हर नवोदित-स्थापित व्यक्ति के लिए एक अनिवार्य पाठ।

उपन्यास

लाल गुस्से के अँगूर **जॉन स्टाइनबेक** अनु. राजकुमार राकेश **695.00**

जॉन स्टाइनबेक के उपन्यास Grapes of 2rath ने 1939 में अपने प्रकाशन के साथ ही अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति रुज़बेल्ट के प्रशासन के चूलें हिलाकर रख दी थीं। 'लाल गुस्से के अँगूर' अमरीकन स्लैंग में लिखी गई उसी सर्वकालिक कृति का हिंदी रूपांतरण है। स्टाइनबेक ने जुलिया वार्ड होव के 'दॅ बैटल हाईम ऑफ दॅ रिपब्लिक' के एक लिरिक से इन शब्दों को उठाकर अपने इस उपन्यास का नामकरण किया था। इसका सीधा रिश्ता अमरीका में 1932 में आई आर्थिक मंदी के विनाशकारी प्रभावों से बेघरबार हुए और ओकलाहॉमा जैसे पिछड़े राज्यों से कैलीफोर्निया की तरफ मजदूरी की तलाश में दर-दर भटकते किसानों

के आंतरिक गुस्से से जुड़ता था। इसके पाठ के भीतर 'लालगीरी' और 'लालगीर' जैसे शब्दप्रयोगों में इसे सार्थक अभिव्यक्ति हासिल है। उन्हीं तमाम अंतर्निहित भावाथो5 के चलते यह हिंदी रूपांतरण, लाल गुस्से के अँगूर, प्रस्तुत है।

कंदील **राजकुमार राकेश** **495.00**

साहित्य की सृष्टि संघर्षशील लोक के परिश्रम उसके सुखात्मक-दुखात्मक जीवन प्रसंगों और मांगलिक भविष्य की आकांक्षाओं के लिए की जाती है। आज जो असमानता चारों ओर पसरी हुई है, वह कल सुखद समानता का रूप धारण करे। कथा साहित्य की प्राणवत्ता इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति से प्रबल होती है। कंदील बड़ी निपुणता से किसान परिवार के रहन -सहन और रीति-रिवाज का वास्तविक वर्णन करता है। वस्तुत: आजकल उदारीकरण के दौर में भारतीय किसान जिन मुश्किलों का सामना कर रहा है, वह अभूतपूर्व हैं। उसकी जमीन मिट्टी के मोल खरीदकर सोने के भाव बेची जा रही है, विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लाभ पहुंचाने के लिए। ऐसी विषम परिस्थिति में असंख्य किसान बैंक के कर्जदार हो गए। कर्जा न चुका पाने से उन्हें आत्महत्याएं तक करनी पड़ी हैं। समय आ गया है कि किसान संगठित होकर अपने हक की लड़ाई लड़ें। कंदील इस आशय की महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है।

गांव भीतर गांव **सत्यनारायण पटेल** **495.00**

कहने को 'गांव भीतर गांव' सत्यनारायण पटेल का पहला उपन्यास है, लेकिन दलित महिला झब्बू के जरिए जिस गंभीरता और निरासक्त आवेग के साथ उन्होंने व्यक्ति और समाज के पतन और उत्थान की क्रमिक कथा कही है, वह एक साथ राजनीति और व्यवस्था के विघटनशील चरित्र को कटघरे में खींच लाते हैं। अपनी सीमाओं में जकड़ी ग्रामीण समाज की अति पिछड़ी दलित स्त्रियों को आर्थिक-नैतिक-वैचारिक रूप से सक्षम बनाने की मुहिम में झब्बू स्वयं क्रमश: व्यक्ति से संस्था बनती गई है। झब्बू का अभ्युदय और पतन कथा से बाहर निकलकर समाज में एक बड़ी संभावना के पनपने और नष्ट हो जाने की त्रासदी कहता है, जिसे घटित करने में जितनी भूमिका व्यवस्था को इशारों पर नचाती उपभोक्तावादी संस्कृति की है, उतनी ही अपने भीतर खदबदाती लिप्साओं और बर्बरताओं की भी। 'गांव भीतर गांव' पाठक को अपने इस अनपहचाने 'स्व' को देखने की आंख देता है।

कायर **स्टीफन स्वाइग** अनु. अनुराधा महेंद्र **495.00**

स्वाइग इतिहास के सबसे भयावह उथल-पुथल से भरे कालखंड के लेखक हैं। यही वजह है कि उनके लेखन में युद्ध के उन्माद से ग्रस्त यूरोप के सामाजिक जीवन का आंतरिक विघटन साफ दिखाई देता है। उनका समस्त लेखन युद्ध की बर्बरता के सम्मुख मनुष्य की बुनियादी अस्मिता को बचाने के संघर्ष से जुड़ा हुआ है। स्वाइग ने अपने उपन्यास 'बिवेयर ऑफ पिटी' में बखूबी दर्शाया है कि दया के वशीभूत होकर कोई किस तरह कुछ ऐसा करने के लिए बाध्य

हो जाता है, जो पूरी तरह उसकी इच्छा और मर्जी के खिलाफ होता है। 'दया' एक ऐसा जज़्बा है जो तबाही के मार्ग पर ले जा सकता है। किसी भी दयनीय स्थिति या अपंग, लाचार व्यक्ति को देखकर करुणा और दया दिखाना बहुत आसान है, किंतु दया को अंत तक निभाना उतना ही मुश्किल, इस बात को उपन्यास पढ़कर समझा और महसूस किया जा सकता है।

ये दिये रात की ज़रूरत थे **कविता** **250.00**

सुपरिचित कथाशिल्पी कविता का दूसरा उपन्यास 'ये दिये रात की ज़रूरत थे' बहुरूपिया कलाकारों के जीवन-संघर्ष और उनके सांस्कृतिक-ऐतिहासिक महत्त्व को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। यह उपन्यास जहां एक तरफ लगभग लुप्त हो चुकी इस कला-परंपरा को इसकी सामाजिक-आर्थिक परिणतियों के साथ एक प्रभावशाली कथारूप में सहेजने का जतन करता है, वहीं दूसरी तरफ स्वतंत्रता संग्राम में इसके अवदान का भी मूल्यांकन करता है। लोकजीवन और कला के प्रति गहन आत्मीय लगाव और निष्कलुष आस्था के साथ लिखी गई यह कथाकृति समय, समाज और कला के अंतस5बंधों को एक आत्मीय तटस्थता के साथ विवेचित-विश्लेषित करती है।

भले दिनों की बात थी **विमल चंद्र पाण्डेय** **300.00**

'भले दिनों की बात थी' के कथानक की रूपरेखा है—ऊपर से सहज-साधारण, व्यंजना में गहन और जटिल। भूमंडलीकृत होने के दबाव में हमारी युवा पीढ़ी जिस उत्तराधुनिक भंगिमा वाली अकादमियों से एक विवश बंधन में बंधी नजर आती है, वह उसे जितनी 'ताकत' देती है, उससे ज्यादा 'जमीन' से उसे बेदखल करती है। मूल्यों-संस्कारों के संकट के रूबरू यह पीढ़ी यह तय नहीं कर पाती कि उसे जमीन खोकर भटकते रह जाने की मर्यादा को कैसे हासिल करना है ? यह किशोर मानसिकता का आदर्शीकरण है, जो यथार्थ की कठोर जमीन पर कसा जाने के बाद पाठक के सामने बहुत बड़े सवाल खड़े कर जाता है।

लौटती नहीं जो हंसी **तरुण भटनागर** **200.00**

यह उपन्यास 'हंसी' को एक ऐसे रूपक में बरतता है जिसमें हंसी की उजास के साथ-साथ हंसी के स्याह पक्षों को बहुत संजीदगी के साथ हमारे सामने रखने का प्रभावपूर्ण प्रयास किया गया है। 'लोरमी' जैसे गांव भारत के अनेक सुदूर जनपदों में हमें दिखाई देते हैं। 'बाबू जी' जैसे चरित्र भारत के अनेक गांव-जवार में देखे जा सकते हैं जिनकी अनर्गल महत्त्वाकांक्षाओं से तमाम मानवीय मूल्यों को ध्वस्त होते देखा जा सकता है। उपन्यास की भाषा कविता के बहुत नजदीक है। पात्रों के चयन में भी कथाकार ने गहरी कल्पनाशीलता का परिचय दिया है। उपन्यास सिर्फ कथा का दामन थामकर नहीं चलता बल्कि उसमें कथा के भीतर और बाहर की खूबसूरत आवाजाही देखी जा सकती है, इस अर्थ में इसे प्रयोगधर्मी उपन्यास भी कहा जा सकता है।

इक़बाल **जयश्री रॉय** **300.00**

जयश्री रॉय का नवीनतम उपन्यास 'इक़बाल' प्रेम और राष्ट्र के कश्मकश से उत्पन्न अंतर्द्वंद्वों के बीच इतिहास के सच खंगालता एक ऐसा आख्यान है जिसमें धरती का स्वर्ग कहे जानेवाले कश्मीर की खूबसूरती और वहां के लोगों का आर्तनाद दोनों मौजूद हैं। गोवा और कश्मीर के दो छोरों के बीच फैले जिया और इक़बाल के प्रेम-संबंधों की त्रासदी के समानांतर कश्मीर का वजूद तलाशता यह उपन्यास राग और आग की परस्पर टकराहट से विनिर्मित ऐसे मार्मिक प्रदेश का अनुसंधान करता है जिसकी जड़ों में प्रेम की वेदना, विस्थापन का दर्द और आतंक की त्रासदी समान रूप से उपस्थित हैं। कश्मीर के राजनैतिक इतिहास और कश्मीरियत के अहसास की खुशबू को अपने सीने में छुपाए इस उपन्यास के चरित्र संवेदना के जिस उच्चतम बिन्दु पर टकराते और पिघलते हैं, वहां नफरत और पूर्वाग्रहों की कोई जगह नहीं होती।

अन्हियारे तलछट में चमका **अल्पना मिश्र** **200.00**

यह स्त्री संसार की एक आयामता को तोड़ने वाली कथाकृति है। शोषण और दमन के विविध बारीक रूपों की पड़ताल करती यह उन जगहों को चिन्हित करवाने का साहस रखती है जिन्हें ऊपरी तौर पर प्रतिष्ठित जीवन के रूपक के कहीं भीतर दबाकर अलक्षित मान लिया जाता है। पारिवारिक तंत्र की वे जटिलताएं, जो मानव संबंधों और स्त्री की छोटी से छोटी स्वाभाविकता को खत्म कर देती हैं और इनके भीतर की संभावनाओं को तिरस्कृत करती चलती हैं, वे यहां अपने बेहद ठोस वजूद के साथ साफ पहचान में आएंगी और इनसे टकराने, जूझने के क्रम में गहरे आलोड़नों से अधिक प्रखर हुए स्त्री प्रश्नों, उनके संघर्ष और नई बनती संभावनाओं के अनेक उभरते ओजवान क्षण भी यहां अपनी दमक के साथ मौजूद मिलेंगे।

नौकर की कमीज **विनोदकुमार शुक्ल** **350.00**

'नौकर की कमीज' एक ऐसे समाज के युवा विश्वास का वाहक है, जो अभी तक अपनी सामंती मानसिकता से मुक्त नहीं हुआ है तथा उसके सामने कला की अभिव्यक्ति के माध्यमों के नष्ट होने के खतरे बहुत पास खड़े हैं। पूंजीवाद का भूत उन्हें लील जाने को आतुर है। इसका यथार्थ बहुत धीमी गति से आदमी के द्वंद्व को सतह पर लाने के प्रयत्नों को सफलता तक पहुंचाता है। लेकिन कहीं भी इसमें माया या फेंटेसी नहीं, दुनियादारी के रोजाना के साधारण से साधारण चित्र हैं।

धर्मक्षेत्र **राजकुमार राकेश** **350.00**

'तुम्हारे भीतर बहुत अंधेरा है पवनकरण देव,' मैं खुद से कह रहा हूं : 'कोई तो रास्ता खोजो जो बाहर फैली अथाह रौशनी को तुम्हारे भीतर लाने का रास्ता ढूंढ़ने में तुम्हारी मदद कर सके...' डॉ. पवनकरण देव इस उपन्यास 'धर्मक्षेत्र' के उस व्यापक द्वंद्व के प्रतीक हैं, जहां अंधेरे और रौशनी के बीच भयावह जंग है तथा अन्याय के विरुद्ध न्याय, दमन के खिलाफ निजी आजादी और जंगलराज के प्रतिकार में कानून के राज्य की स्थापना का अनवरत संघर्ष

मौजूद है। यह वर्चस्ववादी सत्तावाद द्वारा कमजोर आदमी को धकियाते चलने के प्रतिरोध का एक दस्तावेजी रचनात्मक बयान है।

हिडिम्ब **एस.आर. हरनोट** **300.00**

इस उत्तर आधुनिक समय में जब जल, जंगल, पर्वत, जमीन की चिंताएं हाशिये पर चली जा रही हैं, एस.आर. हरनोट का उपन्यास 'हिडिम्ब' इन चिंताओं को विमर्श के केंद्र में लाने की एक विनम्र कोशिश है। हरनोट एक विनम्र कथाकार हैं, लेकिन समय की क्रूरता को वे पूरी सख्ती के साथ पकड़ने की कोशिश करते हैं। एक दुर्गम पहाड़ी अंचल की कथा को वैश्विक सरोकारों के साथ प्रस्तुत करने वाला यह शायद इस तरह का पहला उपन्यास है।

कहानी संग्रह

संपूर्ण कहानियां **वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता** **595.00**

वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता हिन्दी के उन इने-गिने साहित्यकारों में से हैं, जिन्होंने स्वाधीनता के बाद अपनी कहानियों में बदलते जीवन की सतही विडंबनाओं के साथ मानसिक परिवर्तन के रोये-रेशों की पहचान एक साथ की है। इसके अलावा बदलती जीवन स्थितियों में मानवीय संबंधों के उलझे सूत्रों की पहचान भी इन कहानियों में है। इन कहानियों का संबंध समाज और जीवन से है। हर कहानी समाज के एक विशेष अंग, एक विशेष चरित्र को छूती है और बड़े ही सहज ढंग से हमारे सामने उसकी सच्चाई को उजागर करती है। इनमें आपको बासी कथानक न मिलेंगे, घिसा हुआ रूप या शैली न मिलेगी, यांत्रिक आरंभ, मध्य और अंत न मिलेगा। ये कहानियां बड़ी सीधी-सादी, हल्की-फुल्की और कहने-सुनने के ढंग की हैं, लेकिन ऊपर जितनी हल्की मालूम होती हैं, अंदर से उतनी ही गहरी और चोटिली हैं। यही इनकी खूबी है।

ख़यालनामा **वंदना राग** **250.00**

इक्कीसवीं शताब्दी की शुरुआत में युवा कहानीकारों की जिस पीढ़ी का उदय हुआ, उसमें वन्दना राग का नाम कई कारणों के चलते अलग से ध्यान खींचता है। उनके लेखन में एक ऐसी निरपेक्षता है, जो कहन की नई शैली की स्थापना में योगदान देती है। चलताऊ अर्थों में वे किसी नारी विमर्श जैसी स्थिति से मुक्त दिखती हैं, मगर अनायास ही उससे पार पाकर काफी आगे की बात कहकर निकल लेती हैं। प्यार के सघन क्षणों में मुक्तिबोध की स्मृति इस मुक्ति के पार संसार और जीवन के नये द्वार खोलती है। इसी तरह कहानियों में जो सिनेमाई संदर्भ मौजूद हैं, वे भी इन्हीं नई अर्थछवियों के द्योतक हैं और अपने स्तर पर नए अर्थप्रयोग रचते चलते हैं। ऐसे में खयालों, सपनों, कल्पनाओं, धोखों, चुप्पियों, शोर, शरारतों और जीवन के व्यापक यथार्थ को समेटती यह कहानियां अंत में लेखक की आगामी रचनाशीलता का आश्वासन देकर जाती हैं।

एक दिन मराकेश **प्रत्यक्षा** **200.00**

प्रत्यक्षा निजी अनुभूतियों की कहानी कहती हैं। उनके कथानक एब्सट्रेक्ट के निकट चले जाते हैं, पर उस एब्सट्रेक्शन में मनुष्य जीवन के कई रूपक साफ उभरते हैं। हमारे पहाड़ के लोकजीवन में वह प्रेमी का रूपक है। इस संग्रह की कहानियों के शीर्षक से लेकर कथानक तक एक अलग लहजे की बनक साथ रखते हैं, उनमें उत्तर-आधुनिक संसार के दृश्यबिम्ब हैं, उनके पात्र ग्लोबेल हैं, पर वे बहुत घरेलू आवाज में बोलते हैं। इस कथा-संसार में एक अबूझ लगने वाले कैनवास से अचानक बहुत जाने-पहचाने आकार सामने लगते हैं, तस्वीर खुलने लगती है। मानवीय संबंधों की धाराएं यहां दरअसल अंतर्धाराएं हैं— ऊपरी सतही बहाव में जीवन खोजने के प्रयास यों भी उतने ही सतही होते हैं। इन कहानियों में कोमल धड़कनें हैं, भरपूर नमी है, जीवन को गरिमा एवं उदात्तता के साथ संभव करता एक समूचा पर्यावरण है।

एडवांस स्टडी **राजकुमार राकेश** **300.00**

सघन आंतरिक दबावों के चलते जब कहानी लिखी जाती है, तब उसमें मौजूद कल्पना और यथार्थ को एक दूसरे से अलग रेखांकित कर पाना मुश्किल काम है। राजकुमार राकेश की यह कहानियां इसी दिशा में इंगित करती हैं। नवउदारवाद की अवारा पूंजी ने मानवीय रिश्तों में ऊष्मा की धार को कुंद कर डालने का जो सिलसिला शुरू किया है, वह पीछे न लौट सकने वाली किसी भी हद के पार तक जारी है। इसने निजी, वैयक्तिक, सामाजिक और राजनैतिक संबंधों का ऐसा पुन:निर्धारण किया है, जो अपनी हर मौलिक पहचान से परे है। ऐसे में जीवन की कोई विधा इससे अछूती नहीं रह सकती थी। 'एडवांस स्टडी' की यह कहानियां उन्हीं नए उपकरणों से इन तमाम बदलावों की खंगाल-पड़ताल करती हैं।

लिटन ब्लॉक गिर रहा है **एस.आर. हरनोट** **250.00**

हरनोट की कहानियों से गुजरते हुए आप कह सकते हैं कि यहां है गहरी जनधर्मी संवेदना, यहां है एक व्यापक परिदृश्य, जो परंपरा और इतिहास को नापता हुआ प्रागैतिहासिक गुहांधकारों तक बेहिचक चला जाता है। यहां आप यह बात भी कह-देख सकते हैं कि उनकी कहानियां समय और स्थान की सीमाओं के पार बैठे मनुष्य की 'मानवीय संवेदना' के शाश्वत रूपों व आधारों को भी अक्सर छूती-पकड़ती हैं, जिन्हें इधर की कहानी ने बेगाना-बहिष्कृत बनाकर हाशियों पर धकेल दिया है। 'आभी' चिड़िया और 'लिटन ब्लॉक गिर रहा है' की कुतिया के साथ वे ऐसे मानवीय रिश्ते में बंधते हैं कि हम संवेदना के तल पर प्रेमचंद की 'पूस की रात' की ऊंचाई को दोबारा छूते-सहेजते और विकसित करते हुए बस अवाक् खड़े रह जाते हैं।

पांच मिनट और अन्य कहानियां **योगेन्द्र आहूजा** **250.00**

पिछली सदी के आख़िरी हिस्से में उत्तर भारत के छोटे और मंझोले शहरों के युवा मध्यवर्ग के सामाजिक-नैतिक जीवन का ख़ामोश सा ड्रामा इन कहानियों की जान रहा है। किसी भी पात्र

में एक पूरी पीढ़ी का जीवन दिखाई दे जाता है, पर पात्र अपनी वैयक्तिकता नहीं खोते। वह अपने चरित्रों को उनकी विशिष्टता और गरिमा में मूर्तिमान होने देते हैं लेकिन ऐसे नहीं कि वे अपनी पृष्ठभूमि या परिस्थिति पर हावी होने लगें। अपनी कहानियों में वह मनोयोग से अपनी पीढ़ी के उस आंतरिक जीवन, अंतद्व5द्व और युगबोध की तस्वीरकशी करते हैं जो हमेशा उनके अंदर एक रिसते ज़ख्म या ज़ख्म के निशान की तरह बसा रहता है, चाहे बाद की हताशाओं, प्रवंचनाओं, विफलताओं और समझौतों ने उन्हें अपनी ही नज़र में कहीं का न छोड़ा हो।

लाल बहादुर का इंजन **राकेश मिश्र** **200.00**

राकेश अपनी कहानियों में ऐसी प्रक्रियाओं का विवेचन करते हैं, जिन प्रक्रियाओं ने समय के भीतर से गुजरकर अभी कोई रूप हासिल नहीं किया। वे अभी चल रही हैं। किसी चलायमान प्रक्रिया को कहानी के फ्रेम में लाना बहुत मुश्किल काम है क्योंकि अभी उसकी कोई दिशा तय नहीं हुई है। उसके बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला गया है। राकेश इसी मुश्किल से जूझ रहे हैं। वे किसी पूर्व व्याख्यायित घटना या अनुभव से अपनी कहानी का ताना-बाना नहीं बुनते बल्कि ऐसे चरित्रों को सामने ला रहे हैं, जो सांय-सांय करते इस समय के भयानक ट्विस्ट में कहीं भी अपने पांव टिका नहीं पा रहे हैं। यह शिल्प भले ही आज हमारे अवबोध के अनुकूल नहीं है, लेकिन आने वाले समय में वह बहुत गहराई तक अपनी जगह बनाएगा।

काफिर बिजूका उर्फ इब्लीस **सत्यनारायण पटेल** **200.00**

सत्यनारायण पटेल महानगरीय सभ्यता में आत्मविस्मृति का जीवन जीते व्यक्ति को जब कहानी नहीं, किस्सा सुनाने लगते हैं, तब विज्ञान और तकनीक की भूलभुलैया में हड़बड़ाए 'मानुष' को अनायास अपनी कहन-शक्ति में बांध लेते हैं; और फिर सूखी जमीन पर भीतर-भीतर धंसते पानी की तरह उसकी अंतश्चेतना पर सवालिया निशान बना काबिज हो जाते हैं। स्याह अंधेरों को अपने हौसलों के बूते चीर देने का विश्वास इस संग्रह की कहानियों की ताकत है जो सबसे पहले अपने भीतर पसरे अंधेरों को चीन्हने की तमीज देता है। शायद इसीलिए बिजूका की तरह अपने मानवीय वजूद का उपहास सहता आम आदमी उनकी कहानियों में क्रमश: निखरता हुआ व्यवस्था की कठमुल्ला ताकतों के लिए पहले काफ़िर बन जाता है और फिर इब्लीस।

अंधेरे की कोई शक्ल नहीं होती **ज्योति चावला** **250.00**

ज्योति चावला की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां स्त्री के सभी शेड्स देखे जा सकते हैं। यहां एक संघर्षशील स्त्री है तो एक शोषित स्त्री भी है। ठेठ गांव की स्त्री का संघर्ष है तो वहीं इस भूमंडलीकरण के बाद भारत की बदली हुई तस्वीर में दोहरे संघर्ष को झेलती स्त्री की भी छवि है। वे अपनी कहानियों में स्त्रियों को लेकर कोई मेटाफर या आदर्शवाद का इस्तेमाल नहीं करतीं बल्कि यहां स्त्रियां यथार्थ की जमीन से उठकर आती हैं। ज्योति के पास अपने समय को लेकर बहुत कन्सर्न हैं और चिंताएं भी, इसलिए ये कहानियां अपने

समय की धड़कन सी बन गई हैं। इन कहानियों में खामोशी और अंधेरा यहां से वहां तक तारी है। अपनी कहानियों में वे कहानी के लोकेल को बहुत महत्त्व देती हैं। जो कहानी जिस परिवेश की है, वहां की भाषा, रंग-ढंग, तीज-त्यौहार तक बहुत विश्वसनीय ढंग से आते हैं।

भविष्यदृष्टा **ओमा शर्मा** **300.00**

वैसे तो ओमा और उनकी पीढ़ी के पास कथा की एक समृद्ध विरासत है, मगर उनकी कहानियों के पात्र बतरस में ओढ़ी हुई गंभीरता या मुक्त ठिठोलियों से बहुत दूर तक ले जाते हैं। फिर किसी मायावी राक्षस की तरह खुद ही पुकारते हैं और खुद अंदर से विस्फोट करते हैं ...नि:शब्द विस्फोट। छोटे-छोटे लोगों की छोटी दुनिया, छोटे सपने, बड़े डर और बड़ी घुटन। क्षेत्र भिन्न हैं, प्रकृति भिन्न है, वर्ग भिन्न हैं, स्वार्थ भिन्न हैं, मगर मरीचिका है कि उन्हें भटका रही है यहां से वहां, वहां से यहां। इन्हीं मचलती, थरथराती जीवन रेखाओं को पकड़ने की कोशिश करती हैं ओमा शर्मा की ये कहानियां। इन्हें उकेरने के लिए ओमा के कथाकार ने जिस शिल्प-लय का संधान किया है, वह पात्र व परिवेश को खिलाने में न सिर्फ मौजूं है बल्कि उसकी खूबी यह है कि उसकी व्यंजना सतह पर प्रकटत: दिखती नहीं, लेकिन अंत तक आप उसे खुद में पाते हैं। पढ़ी जाने के बाद अरसे तक हांट करती रहती हैं ये कहानियां।

कविता संग्रह

आधार चयन : कविताएं **मंगलेश डबराल** **250.00**

मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय से अपनी सर्जनात्मक प्रेरणा ग्रहण करती हुई हिंदी कविता की आज जो पीढ़ी उपस्थित है, उसमें मंगलेश डबराल जैसे समर्थ कवि इतने वैविध्यपूर्ण और बहुआयामी होते जा रहे हैं कि उनके किसी एक या चुनिंदा पहलुओं को पकड़कर बैठ जाना अपनी समझ और संवेदना की सीमाएं उघाड़कर रख देना होगा। एक ऐसे संसार और समय में, जहां जिंदगी के हर हिस्से में किन्हीं भी शतो5 पर सफल हो लेने को ही सभ्यता का चरम आदर्श और लक्ष्य निर्धारित कर दिया गया हो, मंगलेश अपनी कविताओं में विफल या अलक्षित इंसान को उसके हाशिये से उठाकर बहस और उल्लेख के बीचोंबीच ले आते हैं। इन विचलित कर देनेवाली कविताओं में गहरी, प्रतिबद्ध, अनुभूत करुणा है जिसमें दैन्य, नैराश्य या पलायन कहीं नहीं है। मगलेश एक ऐसे विरल सर्जक हैं जिनकी कविताओं में उनकी आवाज़ें भी बोलती-गूंजती हैं जिनकी आवाज़ों की सुनवाई कम होती है।

बेघर सपने **निर्मला पुतुल** **150.00**

एक आदिवासी स्त्री का जीवन, संघर्ष, दुख और उसकी पराजय- सब निर्मला पुतुल के इस कविता संग्रह में बहुत ही विश्वसनीय रूप में आया है। इन कविताओं में विचार है या कहें वषो5 से चला आ रहा पूरा विमर्श है, परंतु यह कहीं भी विमर्श की कविता नहीं लगती है। कहने का अर्थ साफ है कि निर्मला की कविताओं में इन विचारों के साथ-साथ कवितापन में

कहीं भी कमी नहीं है। इस संग्रह को पढ़ने के बाद हमें भारत की असली तस्वीर का अंदाजा होता है और सही मायने में हम इन कविताओं के साथ ही अपने समय के सामाजिक इतिहास को मुकम्मल रूप में समझ पाते हैं। वास्तव में ये कविताएं अपने समय में इतिहास में छूट गई वे दरारें हैं, जिन्हें बगैर देखे इतिहास एकांगी रह जाता है।

सरे-शाम **असद ज़ैदी** **350.00**

इस किताब में 1975 से 2008 के बीच लिखी कविताएं, जो आगे तीन संग्रहों में प्रकाशित थीं, कमोबेश ज्यों की त्यों संकलित हैं। कविताओं के बारे में क्या कहें, सिवा इसके कि कालान्तर में हर चीज़ अपनी मूल प्रेरणाओं से ज़्यादा अपनी परिस्थितियों की गवाह बन जाती है और उन्हीं की दास्तान बयान करने लगती है—प्राय: अपनी बात को छिपाते हुए। एक अरसे बाद लिखने वाले को अपनी लिखावट कुछ और कहती लगती है, और ऐसी गुंजाइश रहनी चाहिए। एक युग तो गुज़र ही गया है। वक़्त का गुज़र मनुष्य पर होता है और उसके कामों पर भी, पर अलग-अलग तरह से। यही उम्मीद है कि वक़्त की ये मार इन कविताओं पर ऐसी न पड़ी हो।

प्रतिनिधि कविताएं **लाल सिंह दिल सं. सत्यपाल सहगल** **250.00**

दिल पिछले तीस-चालीस बरस की पंजाबी कविता के परिदृश्य को पूरा भी करते हैं और उनके बिना जो काव्य-दुनिया पीछे रह जाती है, उसे चुनौती भी देते हैं। अगर दिल की सुनें, तो वे अपनी परंपरा पंजाबी की हमारी जानी-पहचानी कवि-परंपरा से हट कर बतायेंगे, जोकि संतराम उदासी जैसे निचली तहों से आये जुझारू लोककवियों की परंपरा है, जिससे हिन्दी की अनुवाद-दुनिया का अब तक कम ही वास्ता पड़ा है। यह किताब इस कमी को भरने की दिशा में उठाया गया पहला बड़ा कदम है।

आकाश धरती को खटखटाता है **विनोदकुमार शुक्ल** **200.00**

विनोदकुमार शुक्ल समकालीन कविता के संसार में आज ऐसे कवि के रूप में बहुप्रतिष्ठित हैं जिनकी कविता को बिन उनके नाम के भी जागरूक पाठक पहचान लेते हैं। वे हिन्दी के उन कवियों में हैं जिनकी कविता का कथ्य, शिल्प दूर से ही चमकता है। इनकी ख़ासियत यह है कि वे आज मौजूदा कवियों की पीढ़ियों के बीच शायद अकेले कवि हैं जो समकालीन कविता या कहें कि कविता की प्रचलित रूढ़ियों, फैशनों के विरुद्ध जाकर कविता के एक अलग राह पर चलने में यकीन रखते हैं। प्रस्तुत कविता संग्रह उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है जिसका युवा आलोचक अरविंद त्रिपाठी ने चयन-संपादन किया है।

सम्पूर्ण कविताएं **पाश अनु. चमन लाल** **450.00**

पाश की कविता हमारे घायल समय के लहू से लिखी गई क्रांति की इबारत है। यहां दमन और शोषण के विरुद्ध एक तीव्र आक्रोश है जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक खौलती हुई

भाषा भी गढ़ लेता है। मनुष्य के सपनों के मर जाने को सबसे ख़तरनाक मानने वाले पाश की ये कविताएं सपनों को मरने से बचाने की लड़ाई लड़ रहे एक योद्धा की आवाज़ें हैं।

गद्य/आलोचना/दस्तावेज

समय के बीज-आख्यान **विनोद शाही** **300.00**

जिन्हें यह सवाल बेचैन करता है कि एक उपन्यास की जमीन उसके सरोकारों की तमीज कैसे बनती है- यह किताब उनके लिए है। यानी यह किताब हिंदी उपन्यास की जमीन, उसके समाजशास्त्र और इस विधा के विवेचन व मूल्यांकन की कसौटियां तलाशने के लिए अपनी ही जमीन का आधार बनाती है। इसमें लेखक अपने समय के बीज-आख्यानों की तलाश में गोदान, मैला आंचल, मढ़ी का दीवा व धरती धन न अपना से होता हुआ अपने समय के उपन्यासों कंदील व गांव भीतर गांव तक का सफर तय करता है और तुलना वाले परिदृश्य के निहितार्थो5 को स्पष्ट करने के लिए जॉन स्टाइनबेक के ग्रेप्स ऑफ रैथ को भी अपने विवेचन का विषय बनाता है।

मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन **सं. पल्लव** **550.00**

मीरा भक्तिकाल ही नहीं, समूचे हिंदी साहित्य में सबसे बड़ी स्त्री कवि हैं। मीरा कृष्णभक्त थीं और कृष्ण की भक्ति में दीवानी होकर उन्होंने सुख-वैभव को त्याग दिया। उनकी कविताओं में जहां अपने आराध्य के प्रति अनन्य समर्पण दिखाई देता है, वहीं अपने जीवन और कष्टों का चित्रण इन पदों में वह अग्नि भर देता है जिससे यह कविता मध्यकालीन भक्त की आर्त्त पुकार से कहीं आगे जाकर मनुष्यता की व्यापक धरोहर बन जाती है। मीरा का समाज ठहरा हुआ समाज था, जहां गतिशीलता नहीं थी। इस देश में धीरे-धीरे एक केंद्रीय सत्ता स्थापित हो रही थी और अब यहां के समाज में फैले मत-मतांतरों, अंधविश्वासों और रूढ़ियों के विरोध में एक सहज चिंतनधारा भक्ति आंदोलन के रूप में आई। प्रस्तुत संकलन मीरा की कविता के पुनर्मूल्यांकन का एक विनम्र प्रयास है। इस पुस्तक में संकलित सभी लेखों में प्रयत्न किया गया है कि मीरा के व्यक्तित्व और उनकी कविता पर पड़े आवरणों से हटकर उनका सही मूल्यांकन किया जाए।

बाणभट्ट की आत्मकथा **सं. मधुरेश** **450.00**

एक अच्छी और महत्त्वपूर्ण रचना अपने समय से पूरी तरह जुड़ी रहकर भी उसके बाहर जाती है। उसके क्लासिक की श्रेणी में आने के लिए जरूरी है कि वह आने वाले समय के सवालों से भी मुठभेड़ करे। एक रचना के रूप में बाणभट्ट की आत्मकथा आज भी अपने समय के सवालों की कसौटी पर कसकर देखे जाने के लिए उकसाती और प्रेरित करती है। इस चयन का उद्देश्य उसके प्रति एक बेहतर और संतुलित समझ का निर्माण और विकास है। ऐसी

कोई समझ रचना के समूचे परिप्रेक्ष्य को आधार बनाकर ही बनाई जा सकती है। यह संकलन शायद इसका भी एक उदाहरण बन सके कि जिस प्रमाद, जड़ता और विचार शिथिलता के लिए जब-तब हिंदी आलोचना की भर्त्सना की जाती है, वह सिर्फ वही नहीं है,। जरूरी सिर्फ यह है कि बंधी-बंधाई धारणाओं के घेरे से बाहर निकलकर चीजों को देखने-समझने में रुचि ली जाए।

प्राच्यवाद और प्राच्य भारत **विनोद शाही** **300.00**

प्राच्यवाद और उससे जुड़ी चिंतनधारा का जायजा लेती हुई यह किताब खुद को इस सिद्धांत की आलोचना तक महदूद नहीं रखती, अपितु इसे एक प्रस्थान बनाकर और आगे ले जाती है। प्राच्यवाद से लेकर प्राच्य भारत तक के यथार्थ को समझने-खोजने और फिर उस समझ को एक अपने मौलिक सिद्धांत के रूप में उपलब्ध करने की कोशिश तक का बड़ा कैनवास नापती है। यह किताब एक पहल है। इस लिहाज से कि हमारे यहां औपनिवेशिक काल में मौलिक सिद्धांत-चर्चा के अंतर्विकास को जिस तरह, एक सिलसिलेवार सांस्कृतिक साजिश के तहत, स्थगित और विपथित कर दिया गया था, उसे वहीं से खोज-पकड़ कर, पुन: जीवंत करने और प्रतिष्ठित करने की जरूरत है। इसके लिए यह किताब ऋग्वेद से लेकर हमारे समय तक का एक लंबा सफर तय करती है। भारत के विकास और रूपांतर के लिए प्रतिबद्ध लोगों के लिए यह एक जरूरी किताब है।

निराशा में भी सामर्थ्य **पंकज चतुर्वेदी** **500.00**

पंकज चतुर्वेदी की आलोचना का कैनवस बड़ा है। उनकी चिंता एक कवि और आलोचक की ही नहीं, एक नागरिक की भी है। वे समकालीन आलोचक हैं, जो अपने समय के प्रश्नों से यथासंभव, यथाशक्ति मुठभेड़ करते हैं। वे गंभीर, बेचैन और कर्तव्य-बोध से संचालित हैं। उनकी प्रश्नाकुलता, वैचारिकता, सृजनात्मक संवादपरकता एक गहरी और व्याकुल चिंता से जुड़ी है। उनका लेखन शाश्वत लेखन के विरुद्ध है। उनकी आलोचना में बहुत कुछ सिमटा हुआ है। पहली दृष्टि में यह टूटी हुई, बिखरी हुई लग सकती है, पर इसमें एक अन्विति है। उनमें परम्परा और इतिहास-बोध है। उनकी दृष्टि कहीं से भी एकांगी और खंडित नहीं है। उनमें आलोचना की सार्थक दृष्टि है, शक्ति और सामर्थ्य भी। निराशा में भी सामर्थ्य हमें निराश और हताश होने से बचाती है, और यह इस पुस्तक की उपलब्धि है।

शताब्दी का प्रतिपक्ष **वैभव सिंह** **300.00**

आधुनिक हिन्दी लेखन का आरंभ आधुनिकता के मूल्यों के साथ माना जाता है। पर किसी भी देश में आधुनिक मूल्य निरपेक्षता में नहीं पैदा होते बल्कि अपने समय की राजनीति, अर्थतंत्र

और जनचेतना के विकास के रूपों से ही उनका स्वरूप तय होता है। हिन्दी क्षेत्र का लेखन संघर्ष और प्रतिरोध के मूल्यों में विश्वास करने वाला लेखन रहा है और इसका बड़ा कारण यह भी है कि यह क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन और किसान आंदोलनों का क्षेत्र रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी के पंद्रह गंभीर लेखकों पर लिखी आलोचनाएं संकलित हैं और उनकी रचनाओं में प्रतिबिंबित हिन्दी क्षेत्र के यथार्थ को पहचानने का प्रयास किया गया है।

भारतीय उपन्यास और आधुनिकता **वैभव सिंह** **350.00**

इस पुस्तक में उपन्यासों के जन्म के आरंभिक दौर की इन्हीं बहसों व प्रवृत्तियों से जिरह का प्रयास किया गया है। उपन्यासों के अतिरिक्त 19वीं सदी के ही अन्य विवादों, जिनका मूल संबंध आधुनिकता के मूल्यों से था, उन्हें भी पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। जैसे कि डेरोजिओ जैसे महान चिंतक के साहित्य-संस्कृति व वैचारिक योगदान को परखने की चेष्टा की गई है।

खिड़की के पास कवि **विजय कुमार** **350.00**

चर्चित कवि-आलोचक विजय कुमार की इस कृति से गुजरना विश्व-कविता के अनेक शीर्ष कवियों के संसार को जानना और समझना है। उनकी संवेदना-दृष्टि का दायरा विस्तृत है और वह प्रखर वैचारिकता और गहन रसज्ञता से युक्त रहा है। उन्होंने पिछले दो दशकों में 20वीं सदी के संसार में विभिन्न भाषाओं के सर्वाधिक चर्चित कवियों के रचना-संसार में गहरे डूब कर कुछ अनूठे निबंध लिखे हैं। ये निबंध विश्व-कवियों के बहाने हमारे समय में सृजन-कर्म की मूलगामी चिंताओं का जायजा लेते हैं। इन्होंने अपने रचना-कर्म से समूची मनुष्य जाति को यकीन दिलाया है कि मनुष्य के भीतर बसी जिजीविषा को परास्त नहीं किया जा सकता।

मार्क्सवाद और साहित्यालोचन **टेरी ईगलटन** अनु. वैभव सिंह **150.00**

टेरी ईगलटन हमारे वक्त के ऐसे विचारक हैं जिन्हें सिर्फ पढ़ना ही जरूरी नहीं है बल्कि जिनकी चीजों के बारे में विचारोत्तेजक पूर्ण बहस करने, ज्ञान के स्थापित सीमांतों को ध्वस्त करने और बोधिकता को लगातार न्याय के पक्ष में इस्तेमाल करने की बेचैनी से काफी कुछ सीखकर स्वयं को भी वैचारिक ऊर्जा से सम्पन्न बनाया जा सकता है। उनकी बहुचर्चित पुस्तक 'मार्क्सिज़्म एंड लिटरेरी क्रिटिसिज़्म' का यह अनुवाद हिन्दी पाठकों को टेरी ईगलटन के व्यापक वैचारिक संसार से परिचित कराएगा।

भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज **सं. चमन लाल** **595.00**

इस संकलन 'भगतसिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज' में उनकी जेल नोटबुक के नोट्स व डॉन ब्रीन की आत्मकथा के अनुवाद के अतिरिक्त विभिन्न विषयों पर पत्रों, लेखों, टिप्पणियों व अदालती दस्तावेजों के रूप में 72 अन्य दस्तावेज संकलित हैं। भारत के मार्क्सवादी-

लेनिनवादी क्रांतिकारी आन्दोलन को अभी लाला हरदयाल व भगतसिंह की क्रांतिकारी विरासत का वस्तुगत आकलन करना है और अपने मौजूदा आन्दोलन को 1931 में भगतसिंह द्वारा छोड़े मोड़ से आगे बढ़ाना है, जिसके लिए भगतसिंह के इन 'सम्पूर्ण दस्तावेजों' का अध्ययन और मनन बेहद जरूरी है।

रचनावली/संचयन

जगदीश चन्द्र रचनावली (चार खंडों में) **सं. विनोद शाही** **4000.00**

भारतीय समाज की अंतरंग और जमीनी समझ के लिए हमें उन कथाकारों के पास जाने की जरूरत पड़ती है, जो इतिहास को रचनात्मक बनाकर नयी शक्ल में गढ़ सकते हैं। प्रेमचन्द और फणीश्वरनाथ रेणु के बाद जगदीश चन्द्र ही ऐसे उपन्यासकार हैं, जिनके अनुभव-संसार में इतनी विविधता और व्यापकता है। ठोस यथार्थ की तफसीलों में जाते हुए भी वे अपने पाठकों की तरल संवेदना के भीतर बहने-तैरने की हैसियत रखते हैं। उनके रचना-संसार का इतिहास-फलक ज्यादातर आजादी के बाद के भारतीय समाज की विकासयात्रा से ताल्लुक रखता है, इसलिए उनके यहां प्रेमचन्द और रेणु की तरह गांव और शहर एक दूसरे से अलहदा पड़े नहीं रह जाते। शायद वे हिंदी के अकेले ऐसे उपन्यासकार हैं, जो गांवों से कस्बों और कस्बों से शहरों के बनने और विकसित होने की दास्तानों के अंतर्विरोधों को उपन्यासों की शक्ल देने में कामयाब हुए हैं। यहां उनकी सारी कृतियों को एक रचनावली का रूप दिया गया है, जिसे कालक्रम के आधार पर खण्डों में नहीं बांटा गया।

रामविलास शर्मा संचयिता **सं. मुरली मनोहर प्रसाद जोशी** **500.00**

साहित्यिक समालोचना के क्षेत्र में रामविलास जी के लेखन की विशिष्टता के कारण विवेचना प्रणाली का स्वरूप ही बदल गया है। अत: आलोचना के क्षेत्र में इस प्रकार के मूलभूत परिवर्तन ने नई पीढ़ी के समीक्षकों के आलोचना-कर्म को भी प्रभावित किया है। इस संचयन को दो खंडों में विभाजित किया गया है। पहला खंड रामविलास जी की सैद्धांतिक विवेचना के परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित है। इसमें नौ ऐसे ही निबंध या आलेख लिये गये हैं जो समालोचना के क्षेत्र में अपना क्लासिक महत्त्व रखते हैं। दूसरे खंड में 18 रचनाकारों के मूल्यांकनों से संबंधित निबंध, आलेख या विभिन्न आलोचनात्मक पुस्तकों से काट-छांट कर संपादित कर ऐसी समीक्षाओं का चयन किया गया है, जिनसे हिंदी की साहित्यिक परंपरा, संस्कृत की साहित्यिक परंपरा, भारतीय साहित्य की परंपरा एवं अंग्रेज़ी की साहित्यिक परंपरा के प्रतिनिधि कृतिकारों पर रामविलास जी का मूल्यांकन हिंदी पाठकों को उपलब्ध कराया जा सके।

साक्षात्कार

उपकथन **मंगलेश डबराल** **300.00**

कवि से बातचीत एक मानी में उसकी कविता का ही विस्तार होती है और उसमें संवेदना के वे सभी तत्व शामिल रहते हैं जिनसे उसकी कविता निर्मित हुई है। इस अर्थ में कवि मंगलेश डबराल के साक्षात्कारों का यह चयन 'उपकथन' भी उनकी कविता का पर्याय है। यह संकलन इस कारण भी उल्लेखनीय बन पड़ा है कि इसमें शामिल संवाद मंगलेश डबराल की काव्यात्मक दुनिया में झांकने और प्रवेश करने के दरवाज़ों और खिड़कियों का काम करते हैं और इनके ज़रिये हम देख पाते हैं कि पहाड़ से चलकर मैदान की ओर आया हुआ यह कवि अपने लंबे रास्ते में क्या-क्या देखता, महसूस करता, खोजता और खोता या पाता आया है। इनमें एक ऐसा कवि संवाद करता हुआ दिखता है, जो अपने समय के बौद्धिक विमशो5 की पड़ताल करने के लिए ज़रूरी संवेदनात्मक और ज्ञानात्मक औज़ारों से लैस है।

व्यक्तित्व विकास/स्वास्थ्य

कम्यूनिकेशन और बॉडी लैंग्वेज **डॉ. पुष्पकुमार शर्मा** **250.00**

क्या है सम्प्रेषण ? क्यों नहीं हम सही सम्प्रेषक बन पाते ? क्यों नहीं हमारी बॉडी लैंग्वेज या हमारे शब्द हमारी बात को सम्प्रेषित कर पाते ? क्या है समस्या ? शाब्दिक और गैर-शाब्दिक अर्थात् वर्बल और नॉन-वर्बल दोनों ही प्रकार के कम्यूनिकेशन में हम सफल क्यों नहीं होते ? क्यों हमें यह कहना पड़ता है कि 'कोई मुझे नहीं समझता' या 'मैं क्यों नहीं आपको समझा पा रहा हूं'। ऐसे बहुत से प्रश्न हमारे और आपके मन में हैं जिनका समाधान क्या हम खोज पाएंगे ? इसलिए यह प्रयास किया गया कि हम सिद्धांतों के साथ-साथ सम्प्रेषण के व्यावहारिक पहलुओं को भी देखने की कोशिश करें। शायद कोई राह निकल आए! बस यह पुस्तक उसी दिशा में एक प्रयास है।

डॉक्टर को दूर रखने का फार्मूला **डॉ. पुष्पकुमार शर्मा** **200.00**

Hurry, Worry और Curry प्रतीक हैं हमारी आधुनिक जीवनशैली के। इसे बदलने के लिए हमें वास्तव में अपनी जीवनशैली को बदलाव की राह पर डालना होगा। हमें अपनी जीवनशैली को बदलकर उसे नयी दिशा देनी होगी और मैं जानता हूं यह कोई बहुत कठिन काम नहीं है, बल्कि संभव-सा कार्य है। बस हमें संकल्प लेना होगा फिर जीवनशैली अपने आप बदल जाएगी। इस पुस्तक में आप देखेंगे कि प्रकृति के करीब जाने की जीवनशैली और आहार हमें स्वयं डॉक्टर से दूर कर देते हैं।

क्रिएटिविटी **हरवंश दुआ** **250.00**

कुदरत सबसे बड़ी रचनाकार है। वह हर पल नया रचती है। उसकी किसी भी रचना में दोहराव नहीं होता। हर इंसान क्रिएटिव होना चाहता है। वह कुछ ऐसा रचना चाहता है, जो अभी तक न रचा गया हो। क्रिएटिविटी हमारे भीतर सोई हुई वह शक्ति है, जो जागृत होने पर इंसान, समाज या दुनिया बदल सकती है। क्रिएटिव इंसान ही कुछ नया सोच सकता है। नया सोचने वाला और नये तरीके से काम करने वाला इंसान ही कामयाब हो सकता है। कोई कार्य क्रिएटिव नहीं होता। उसे करने वाला इंसान क्रिएटिव होता है। क्रिएटिव इंसान जो भी करेगा, वह क्रिएटिव होगा। अगर ज़िंदगी जीनी है तो समस्याओं के बिना गुज़ारा नहीं, अगर समस्याएँ सुलझानी हैं तो क्रिएटिविटी के बिना गुज़ारा नहीं।

सफलता के ग्यारह कदम **हरवंश दुआ** **300.00**

सफलता एक खूबसूरत अनुभव है। इस अनुभव के साथ अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को पहचानना और उन्हें लगातार विकसित करते रहना ही व्यक्तित्व-विकास है। यही विकास व्यक्ति और उसके परिवेश के बीच एक सुखद तादात्मय स्थापित करता है। इस पुस्तक का मकसद भी यही है। अगर आप व्यक्तित्व विकास करना चाहते हैं जीवन जीने की कला को सीखना चाहते हैं, तो इस पुस्तक में दिए गए सुझावों पर अमल करना होगा।

— — — — — — — — — — — — — — — —

पुस्तकें मंगाने के लिए

- पुस्तकें अपने पुस्तक विक्रेता से अथवा सीधे आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला से आर्डर भेजकर मंगवा सकते हैं।
- पत्र-व्यवहार अथवा आदेश के समय अपना पूरा पता— स्थान, डाकघर, जिला, पिनकोड एवं निकटतम रेलवे स्टेशन इत्यादि अवश्य लिखें।
- आदेश की पुस्तकें अथवा पत्र का उत्तर आपको 15 दिन के भीतर न मिले तो इसका तात्पर्य आपका पत्र प्राप्त नहीं होना समझा जाए। अत: पुन: पत्र लिखें।
- बिकी हुई पुस्तकें वापस नहीं ली जाती हैं।
- इससे पहले के सभी सूचीपत्र रद्द किए जाते हैं।

आधार प्रकाशन प्रा.लि. की बैंक अकाउंट डिटेल्स

Aadhar Prakashan Pvt Ltd
Bank of Baroda, Sector-8, Panchkula (Haryana)
A/C 27210200000218
IFSE code : BARB0BLYPAN 0 means zero